बिम्बक पथार

आमोद कुमार झा

बिम्बक पथार

(मैथिली कविता-संग्रह)

आमोद कुमार झा

प्रिय मिथिलेश जीकें
सप्रेम समर्पित।
आमोद
22.11.2015

प्रकाशक :

हरेकृष्णा प्रकाशन

पुलिस पाड़ा, समीप आश्रम

न्यू गड़िया

कोलकाता - 700 0152

मो. : 94331-00407

बिम्बक पथार

(मैथिली कविता-संग्रह)

प्रथम संस्करण - 2014
मूल्य : 100/-

प्रकाशक :
हरेकृष्णा प्रकाशन
पुलिस पाड़ा, समीप आश्रम
न्यू गड़िया
कोलकाता - 700 0152
मो. : 94331-00407

मुद्रक :
लखनपति झा
69, बड़तल्ला स्ट्रीट, बड़ाबजार
कोलकाता - 700007
मो. : 97481-20990, 98830-72050
Email : lakhanjha@hotmail.com

Bimbak Pathar (Collection of Maithili Poems)
By Amod Kumar Jha, 2014, Price : Rs 100/-

काव्य-क्रम

काव्य-क्रम

पोथी क्र० - 349

समर्पण

मातामह स्व. पं. चित्रधर झा

एवं

मतामही स्व. बिन्देश्वरी देवी ंक

पुण्य स्मृति मे।

मिथिलेश कुमार झा
ग्रा॰ जगति
पो॰ बेनीपट्टी
जि॰ मधुबनी, मिथिला
PIN-847223

बिम्बक पथार : शब्दक सहकार

मनुष्यक हृदय मे सद्यः उद्भूत भाव विचार कनैत संवेदनाक सहयोग पाबि जखन शब्दक माध्यमे अभिव्यक्ति होइत अछि तँ ओहि भावपूर्ण शाब्दिक अभिव्यक्तिकेँ काव्यक नाम देल जाइत अछि। काव्य रचानाक मौलिक भावक प्रकटीकरणमे प्रतिभाक संग-संग व्युत्पत्ति आ अभ्यासक योग उच्चतर फल प्रदायक होइत अछि। व्युत्पत्ति आ अभ्यास वास्तवमे ज्ञानार्जन ओ अभिव्यक्ति प्रक्रियाक निरन्तरता थिक जे क्रमशः श्रेष्ठतर बनैत रहैत अछि, परिपक्व होइत रहैत अछि। विचार, भावना, अनुभूति तथा ओकर सम्यक् अभिव्यक्ति-सामर्थ्य रचनाकार हेतु फलदायी सिद्ध होइत अछि।

उन्नैसम-बीसम शताब्दी सामाजिक-आर्थिक, वैज्ञानिक-राजनीतिक क्षेत्र मे सुधार, विकास, क्रांतिक उद्भावना, प्रसार ओ प्रभावक युग रहल अछि। काव्य जगत मे आधुनिक भावबोध, प्रयोगवाद, जनवाद, गीत, नवगीत, गजल आदि सँ आगाँ बढ़ैत उत्तर-आधुनिकताक परिसर मे पहुँचि मानवतावादक प्रवाह चलि रहल अछि। जनवाद एक विचार थिक जकर समावेश काव्योमे देखल जा सकैछ। आजुक काव्य ओहि सँ बहुत आगाँ आबि गेल अछि। भारतीय काव्य एवं मैथिली काव्य जगत मे सेहो एकरा देखल जा रहल अछि। वैचारिक एवं ऐतिहासिक परिवर्त्तनक पश्चातो सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक परिस्थिति जन्य विवशताक कारण जन-जीवन मे यथा अपेक्षित सुधार अथवा परिवर्तन नहि भेल अथवा ई अपूर्ण रहि गेल। तेँ आइ सर्वत्र मोहभंगक स्थिति देखल जा रहल अछि।

पश्चिमी चिन्तक विचारक लोकनि समता तथा मानवताक चर्चा केलनि अछि, करैत रहला अछि। भारतीय संस्कृति ओ साहित्यमे ई तत्व सहज रूपेँ विद्यमान रहल अछि। ओना विसंगति तँ सर्वत्र, सब काल, सब समाज मे विद्यमान रहले अछि आ तकर निदानक प्रयास सेहो होइत रहल अछि। तेँ पश्चिमी विचारधारा वा भावबोधकेँ भारतीय

जीवन-चिन्तनमे आत्मसात कए लेल गेल अछि। एखन उत्तर आधुनिकतावादी लोकनि परम्परा, संस्कृति, इतिहास, विचारक अन्तक घोषणा करै छथि। ई अस्वाभाविक आ विध्वंसक थिक। मानव अस्तित्वे विचारक अस्तित्व सँ संबद्ध अछि। एहि प्रकारक घोषणा स्वयं एक विचार थिक तकरा कोना विसरल जा सकैछ?

भारतीय साहित्यकार धरती, जीवन, वर्त्तमान परिस्थिति-वातावरण जन्यभावक साहित्यकार समस्त विसंगति, विडम्बना, विद्रुपताक अंकन स्पष्टता सँ करैत मानवताक मौलिक बिन्दुक प्रति आस्था बनौने साहित्य सर्जना मे लागल छथि। मानवहित मे सुधार, परिवर्त्तन, विकास सतत काम्य ओ श्रेय रहल अछि, रहबो करत।

परम्परा भंजन ओ नवताक अति उत्साह मे प्रयोगाधिक्यक कारणे आइ सामान्यतया देखल जा रहल अछि जे कविता जीवन यथार्थ सँ हँटिकें ओहि सँ अपनाकें कतिऔने, शब्द सभक खेल बनल जा रहल अछि। एहन स्थितिमे कहल जा सकैछ जे स्वाभाविक रूपें शब्द वास्तविक संवेदनासँ हँटल जा रहल अछि। एकरा एना कहि सकै छी जे संवेदनाक अभिव्यक्ति आ सम्प्रेषण मे शब्द असमर्थता दिस अथवा निरर्थकता दिस उन्मुख भेल जा रहल अछि। आइ कविताकें एहि सँ सुरक्षा-संरक्षाक आवश्यकता पड़ि गेल अछि। नव पीढ़ीक कविकें एहि दिशा मे सचेत रहि आगाँ सक्रिय रहबाक चाही। केवल शब्दक कलाकारी नहि काव्य-उत्सक सम्यक् उत्सर्जन सेहो हेबाक चाही। शब्दक प्रयोग सँ ओहि मे निहित सम्वेदना उपलब्ध ओ अभिव्यक्त अथवा व्यंजित रहला सँ भाववितान मे शब्दक चित्रात्मक बहुलता मे वैचारिकताक तदनुकूल समावेशक अपेक्षा रहब अस्वाभाविक नहि कहाओत।

प्रस्तुत कविता संग्रह `*बिम्बक पथार*` *आमोद कुमार झा*क वैचारिक वितान ओ मानवीय संवेदनाक यथार्थ दिग्दर्शन ओ अभिव्यक्तिक परिचय प्रस्तुत करैत अछि। एकर विषय वैविध्य वास्तवमे आमोद कुमार झाक रचना संसार आ सरोकारकें अभिव्यक्ति करैत अछि।

एहि संग्रहक प्रत्येक कविता कविक सहज भावक, सद्यः अनुभूतिक समाजक अंग उपांगक, वस्तु-घटनाक, घर-आँगनक, खेत-पथारक, बाध-बोनक, गाछी-विरछीक, देखल, भोगल, अनुभव कएल दृश्यांकन थिक।

अतुकान्त कही, छन्दहीन कही, छन्दमुक्त कही, आत्मनेपद परस्मैपदक द्वन्द्वसँ मुक्त, छन्द बन्धसँ मुक्त, केवल वैचारिकता, मनःस्थितिक अंकन, परिस्थितिक रेखांकन स्वतःस्फूर्त शब्द प्रस्फुटन प्रस्तुत ग्राम्य जीवनक श्वेत पक्षक स्मरण, नगर जीवनक श्याम पक्षक अभिव्यंजन, शिक्षा अशिक्षाक द्वन्द्व, आर्थिक संघर्षक जटिलतम स्थितिक मूल्यांकन भावना, व्यवहार ओ वैचारिकताक संघर्ष सहित विश्व मे होइत परिवर्त्तनक चित्रांकन आमोद जीक प्रत्येक कविता मे विद्यमान। `हेराइत भाव` मे युवावर्गक चिन्तन ओ मनोभाव, `हमरा अउरक भाषा` मे सामाजिक रूपें वंचित वर्गक भाषिक-सांस्कृतिक उपेक्षा/ अवहेलना -

देखियौ ने छीन लेतै कियो
हमरा अउरक भाषा
ककर बापक दिन हइ
सिर लेबै वा सिर कटा देबै -

वंचित वर्ग भाषिक चेतना ओ अस्मिता रक्षाक उद्घोषणाक अन्यतम दृष्टान्त। तहिना `मोबाइल` मे एकरा पर अत्यधिक निर्भरता पर व्यंग्य, `आशा भरल मुस्की` मे संघर्ष ओ जिजीविषाक व्यंजना/ गाममे परदेशी, बाहरमे प्रवासीक स्थिति, शहरी जीवनक संवेदनहीनता संपर्क विहीनता अपनत्वहीनता जन्य परस्पर निरपेक्षता, वृद्धक अधोगति, पाश्चात्य संस्कृतिक मरीचिकामे चोन्हराइत स्थायी गाम-घरक विस्मरण, अपने घरमे विलोपित होइत मैथिली, दहेज हत्या, काव्यगोष्ठीमे उपरौंझ आदिक अभिव्यक्ति कथाक रेखाचित्र जेकाँ हिनक कविता समाजक विभिन्न चित्रकें अभिव्यंजित करैत अछि। मानवीय सम्बन्धमे अबैत स्खलन, मनुष्यता, मानवीयता पर गहींर होइत संकट,

वर्त्तमान समयक मूल्यहीनता एवं पतनशीलता आदिकें शब्दक माध्यमे रेखांकित करैछ प्रस्तुत संग्रहक कविता सभ।

भाषिक प्रयोग मे `गोबर छाउरक ढकिया नाहितं दुरा-दलान, ठेठ शब्दावलीक उदाहरण स्वरूप देखल जा सकैछ। एहि प्रकारक प्रयोग काव्यानन्दक बोधगम्यतामे सहायक बनैछ।

शब्द गठन, ठेठ शब्द व्यवहार अथवा वाक्य विन्यास आमोद जीक अपन छनि। एहिमे ककरो अनुकरण देखब केवल आभास कहल जा सकैछ किएक तँ एतए अन्य रचनाकारसँ भिन्नता स्पष्ट अछि। अधिकांश कविता सद्यः अनुभूत, सद्यः देखल-भोगल यथार्थक शब्दचित्रक पथार जकाँ पसरल अछि - विभिन्न स्थान, काल, परिस्थिति, मनोभाव आदिकें शाब्दिक अभिव्यक्ति दैत लचड़ व्यवस्थाक दुष्परिणाम, विद्रूपता, विभिन्न संत्रास, क्षोभ, कुंठा, अविश्वासक तिमिराछन्न विषाक्त विसंगतिक विविध रंग चित्रक शाब्दिक अभिव्यक्ति मे लयात्मकता ओ गतिमयता कविक रूपमे हिनक उज्ज्वल भविष्यक संभावना सिद्ध करैछ।

`*बिम्बक पथार*` कविता संग्रहक काव्यकार श्री आमोद कुमार झाक सफलता ओ यशक उच्चतर सोपान सतत दृढ़तापूर्वक पार करैत रहथि तकर कामना।

- बासुकीनाथ झा

आत्म निवेदन

मैथिली साहित्यक गतिविधिक अध्ययनमे रूचि रखनिहार सुधि पाठकक बीच अपन ई प्रथम मौलिक काव्य रचना `बिम्बक पथार` लय उपस्थिति होयबाकाल, आनन्दक अनुभूति भय रहल अछि तऽ दोसर दिश पाठकक मानसिकता एहि पोथीक प्रति केहेन बनतनि, ताहि दुविधा मे सेहो छी ! किएक तऽ हम मैथिली भाषा साहित्यक एम.ए. धरिक एकटा साकांक्ष छात्र रही, तें हमरा अध्ययन करैत काल एकर प्रायः सब विधाक जनतब ओ गंभीर अध्ययन प्राप्त करबाक सुयोग प्राप्त भेल। ताहिक्रमे एकर सुदीर्घ इतिहास एवं प्राचीन साहित्यिक परंपरा सँ परिचित होमक चलते रचना करबामे ओ तकर प्रकाशन करेबामे अत्यंत विकलताक अनुभव कय रहल छलहुँ। एहि परिप्रेक्ष्य मे हमर धारणा अछि, जे किछु पाठकक सोझाँ राखल जाय तकरा खूब जाँचल-परखल जयबाक चाही, से खास कऽ नव रचनाकार एवं लेखक ओ आलोचककें विशेष रूपें, किएक तऽ एखन पोथी छपायब प्रायः फैशन (Fashion) भेल जाइत अछि। मैथिली साहित्यक अन्तर्गत पछिला किछु वर्षसँ खूब पोथी छपि रहल अछि जे एकर साहित्यिकी सेहतकें दिनानुदिन गर्त्तमे लय जा रहल छैक। तें एहि क्षेत्रमे कार्य केनिहार वा लिखनिहार कें विद्वानक अभिमत आवश्यक रूपें लेबाक चाही। एहि भावनासँ अभिप्रेरित भए निवेदन कयल प्रतिष्ठित साहित्यकार-सम्पादक-निबंधकार-आलोचक प्रो. डॉ. बासुकी नाथ झाजीकें पांडुलिपि टाइप करा प्रेषित कयल। पश्चात् देखि परेखि कऽ ओ `बिम्बक पथार` नामे जे शीर्षक दय लिखला `बिम्बक पथार : शब्दक सहकार` से पढ़ि हम अनुभव कयल जे पोथी प्रकाशनक लेल प्रमाण-पत्र प्राप्त भेल।

पोथीक नाम `*बिम्बक पथार*` एहि वास्ते राखल गेल जे वैचारिक स्तर युगबोधें अनुभूतिक स्वरूप कायम करैत अछि, बिम्ब शब्द अंग्रेजी भाषाक Reflection`क रूपांतरण अछि आशय भारतीय भाषाक मध्य काव्य विधाक क्षेत्र मे बिम्ब शब्दक खूब चर्चा परिचर्चा भेल

अछि। बिम्ब विषयक चर्चा पश्चिमी समीक्षा शास्त्रमे सेहो खूब भेल छैक, बिम्बक स्वरूप-विश्लेषण ओ बिम्बक स्पष्ट इमेज (Image) माने खियाल जिज्ञासुक मनमे स्पष्ट नहि भऽ पबैत छनि, जे ओ शब्दकें अलंकारिक अर्थ मे तेना स्थुल भावें देखैत छथि जे स्पष्ट रेखाचित्र सामने नञि अबैत छनि। जखन कि भारतीय अलंकार शास्त्र मे एकरा रूपक विधान भावें देखि स्पष्ट कयल गेल अछि जे बिम्ब एकटा प्रतिछायाक रूपें काव्यमे, विधान कयल गेल अछि।

बिम्ब पर अलंकार शास्त्रक बाद, मनोविज्ञान, नीति वृतिशास्त्र पुराण ओ समाज विज्ञान आदिक रूपें ततेक विचार भेलैक जाहिसँ बिम्ब अपन शाब्दिक अर्थ ओ अलंकारिक विधानसँ अपन अर्थसँ दूर चलि जाइछ। अस्तु हमर जे मंतव्य से बिम्ब एकटा कविक हृदयमे सामाजिक परिदृश्यक अनुभव, जकरा ओ शब्द रस, अलंकार, ध्वनि, उचित विचारक संग सृजन करैत अछि आ काव्यानन्दक संग समाजक वास्तविक स्वरूप दर्शऽबैत अछि। तखन काव्यक सोदेश्य धारणा बनैत छैक। समाजक बीच सांसारिक सम्पर्कसँ यथार्थक, चित्रकें हृदयमे अंकित करैत काव्यरूपें पाठककें प्रेषित करब कविक धर्म छनि, सएह धर्म हम एहि काव्य पोथी `*बिम्बक पथार*` नामे प्रेषित कयल अछि से, जे सुधि पाठक निर्णय करताह।

आब हम अहि पोथीक सापेक्ष जे हमरा लेल प्रेरक भेलाह हमर अनुज मित्र लोकनि जिनकर सबहक पोथी प्रकाशित भेल छलनि, आग्रह होइत छल मुदा हम अगुता कऽ कोनो काज नहि करी, हँ धरफरा कऽ करैत छी से, हमर चरित्र अछि। कोलकातामे नून रोटीक प्रबल रहितहुँ पहिलभाव `मातृभाव` पहिल `भाषा मातृभाषा` सँ प्रेरित हम सब दिन रहलहुँ। कोलकाता जे सम्पूर्ण रूपें अही भाव कें प्रेरित करैत अछि तें ने मैथिली साहित्यक एकसँ एक मूर्धन्य साहित्यकार एहिठामक उपजल छथि, तऽ प्रेरणा सहजहि बुझू। एतय मैथिलीक एकटा चलन्त सभाक आयोजन महीनाक दोसर रवि कऽ होइत छैक से `सम्पर्क` नामे प्रसिद्ध अछि। जतय मैथिली साहित्यक प्रेमी लोकनि

पहुँच रचना पढ़ैत छथि आ ताहि पर विवेचना आ समीक्षा होइछ, हमर रचना धर्मिताकें परिस्कृत कयलक तकरा हम नहि बिसरि सकैत छी। हमरा अहि पोथी मे अनुज चंदनक बहुत सहयोग प्राप्त भेल अछि से हृदय सँ धन्यवाद। पोथीक सम्पूर्णता मे *श्री लखनपति झा*जीक कार्यक लेल असीम धन्यवादक पात्र छथि। आ सबसँ बेसी जे प्रवास मे मूल वस्तुक वियोग जे भाव जगबैत छैक ओ भाषा-साहित्य ओ संस्कृतिक प्रति जे मोह जनमैत छैक। जेना वियोगहि मे अपन प्रेमिका बेसी सतबैत छैक, तखनुका जे प्रेमक धारणा से प्रेमक पराकाष्ठा होइछ। तहिना अपन प्रवास मे अपन जन्म स्थान ओ भाषाक प्रति जे प्रेम से स्वाभाविके अछि। ओ जे भाव बिम्ब ग्रहण कए कविताक रूप लेलक तें बंगालक कलकत्ता महानगरकें धन्यवाद।

वर्तमान युग अर्थ ओ भौतिक सुखक युग जिनकर अर्थतंत्र गड़बड़ से सभ तरहें गरबड़। तें पहिने सतत अही पाछू लागल रहैत छी। पश्चात् सहित्यिक भावें प्रबल बुझू। पत्नीक वाणिज्य विषयिक ओ आंग्ल भाषाक प्रेमी हुनका लेल हमर पढ़ब-लिखब सबटा बेकार कार्य थिक। मुदा समयक मापल गृहकार्य आ हुनकर दक्षता हमरा लगैछ ओ अदृश्य शक्ति प्रदान कऽ रहल छथि। अर्थतंत्र सुदृढ़ करबालेल प्रबल मितव्ययी तें एकटा साहित्यिकी व्यक्ति लेल एहि सँ बेसी आर की उपकार भऽ सकैछ तें हुनको हृदय सँ धन्यवाद।

अस्तु, आब समस्त पाठक लोकनि सँ निवेदन हमर जे भाव तकरा पढ़ि अपन विचार एवं सुझाव देथि सएह ने रचनाकारक सौभाग्य थिकैक।

- आमोद कुमार झा

आशा भरल मुस्की

पाथर तोड़ैत-तोड़ैत
ओहि गोरकी मौगीक
हाथ भऽ गेल हेतैक
निरसन कठोर
जमकल छैक ओकर
पयर पर दुनियाँ भरिक माटि
आ माथ पर
छै सेहो गर्दा
नहि छै भरि देह
नुआ-बस्तर
मुदा से मुँह पर
जे छैक मुस्की
जेना बचा कऽ रखने अछि
एखनो धरि अपन जीनगी

•••

टाँगल मोन

रातुक अंतिम पहर
`भोरूकबा`
जड़काला हवा बहैत
आकाशमे चान
फरफड़ाइत गाछक पात
कलमक बीच
एक पेरिया धेने हाथमे झोरा लेने
धूरपर दौड़ैत धरफरायल
उदास भेल आगू बढ़ल
जा रहल छल
नञि छलैक बातावरणसँ कोनो
माने मतलब
मुदा मोन टाँगल छलैक
गामेपर
बुढ़िया मायपर
छठिहारी भेल नेनापर
अधखिजुआ काजपर
दिन दसेक भेल
गाभीन, भैंसपर
दौड़ैत अपस्याँत भेल
टेन पकरबा लय
चिंतित मलिकबाक
काजक लेल
पकरैत काज
तखने ने हेतै
परसौतीक प्रतिकार
नहि तऽ हेतैक काटल
एक्को गफी धान?

●●●

शहरक गाछ

शहरक सड़कक मोड़ पर
मुँह मोरि कऽ ....
एकटा वृक्ष... वृक्ष जेकाँ
प्रवासी जेकाँ...
गाड़ी ओ मनुखक भय सँ
आक्रांत भेल रहैत अछि ठाढ़
नहि अबैत छैक
ओकर चिर-सखा-मित्र
चिड़ै-चुनमुनी
नहि बैसैत छैक
ओकर डारि पर
एतावता ओ गाछ
बीच शहर मे
अनुभुआर भेल
अनादि कालसँ ठाढ़ अछि
ओहिना जेना
कोनो हेरायल-हताश
बेरोजगार युवक
सड़कक मोड़ पर
निराश ठाढ़ अछि

●●●

कतहु प्रवासी, कतहु परदेशी

हमरा नहि सुझैत अछि
गाम घुरबाक बाट
गुन-धुन भेल मति छिन्नू जकाँ
मालिक`क अढ़ौतिया भेल रहै छी
जे कहै छै वा इशारा देलकैक
बुझू फेक दैत छियैक
गोबर-छाउरक ढकिया नाहित
ओकरे खेत ओ खरिहानमे
गामक चिंतासँ भेल रहै छी
मुँह दुब्बर
गाम पर भैया आ माय-बाबूक
संग धिया-पूता तकैत अछि बाट
हम एक्काक घोड़ा जकाँ
टिशन आ मुसाफिरक घरक सदृश
नपैत छी दूरी अपन बासा ओ
मलिकबाक ऑफिस आ काज धरि
नहि रहैत अछि ककरो सँ कोनो सम्पर्क
रहैत छी बाझल दिन-राति
हमरा घरक आगुए मे रहैत छथि
कालू हालदार नहि बुझैत छियैन्हि
अपन पड़ोसी वा अछि कोनो चिन्ह-परचिन्ह
बुझू सब दिन रहैत छथि बिनु देखल
बीति गेल बरीस पर बरीस
मुदा नहि होइत अछि नीक जकाँ
हालो समाचार
सब कहैत छनि हिनका हालदार बाबू
सएह, बरनी हमहूँ बुझैत छी
हालदार बाबू

ने ककरो खुशी मे खुशी
ने ककरो दु:खी मे दु:खी
पौड़ परहक बरदक समान
घूमि-फिरि आबि जाइत छी
फेर ओही ठाम
नहि छै एतऽ हमर भोटर कार्ड
राशन कार्ड
नहि छै कोनो हमरा बजबाक कनियो
अधिकार
तें सब एतय हमरा कहैत अछि
``प्रवासी``
गामक लोक ओ समाज सँ अछि
अपनैती
रहैत अछि शनि ओ रवि`क खोज
भेटत अपन लोक,
सुनब अपन भाषा भरिपोख

जाइत जखन छी गाम खूब सोचि आ बिचारि कऽ
करब एतुका देखलाहा किछु नीक कार्य
मुदा हल्ला करऽ लगैत छथि कन्टिर काका
कहलियनि धू काका की रखने छी आब
पुबरिया अँङगना सँ` भतबरी गोला
बुझू बाजि केने रही कोनो पैघ अपराध
बजला गाम हमर सबहक अछि
नहि अछि कोनो बजबाक अधिकार
गामक बात नहि बुझबैक अहाँ सब
छी बहरबइया
बनि कऽ रहू `परदेशी`
●●●

गाँधी आब कतऽ?

आधुनिकता आ औद्योगिककरण
अभिन्न ओ अविभाज्य
गाँधी जी परेखि लेने छलाह
आ भयभीत रहथि
पश्चिमी सभ्यतामे पैसल
मूल मशीनकें
तें देने छला नारा
मूल हिन्द-स्वराजक
गुलामीक जंजीरसँ
उपजल जमींदार कसाइक-दुराचरण
खा जाइत छलैक इज्जत - आबरू
आम जनताक
बाप बिका जाइत छलैक कत्तहु
माय बिका जाइत छलैक कत्तहु
नेना भीख मंगैत
बिनु अन्न-वसनक कत्तहु
बहुराष्ट्रीय सम्बन्ध अद्‌भुत रूपक
अमेरिकाक व्यापारी भारतमे
भारतक व्यापारी अमेरिकीमे
कर्ममय जीवनक अद्‌भुत सामंजस्य
जीविकाक खोज भूखक डऽरे
अज्ञात कुल-शील सुदूर प्रांत
उपर तलवार नीचा खाधि
त्रिशंकु भेल युवक-युवती
चकचौंध दुनियाँक बद्‌मिजाज ओ बेलगाम

सभ्यताक नकल करैत
औद्योगिकीकरणक शिकार भेल
माय भारतीय मूल
बाप अमेरिकी मूल
नेना अत्मीयता सँ दूर
हिंसक क्रूर आक्रांत समाज मे
गाँधी आब कतऽ गाँधी आब कतऽ
गाँधी आब कतऽ!

●●●

भाष्कर

बिया....!
जे अंकुरा गेल छल
आगू बढ़बाक लेल दैत छल हुलकी
बढ़बाक लेल छल आतुर
खूब उत्साहित
देखैत आकाश दिश जेना
भऽ गेल छल हतोत्साह
ओहि उदण्ड मार्तण्डकें देखिकऽ
माने हुनके रहतनि ई संसार
बिसरा गेल छलनि
जे फेर हेतैक साँझ
फेर हेतैक राति
होयत हुनको अंत
आ काल्हि फेर
हुनका सँ बेसी
तीब्र प्रखर प्रतिभा सम्पन्न
अओतैक एकटा नव `भाष्कर`।

•••

हमरा अउरक भाषा

नञि हइ ककरो गरज
शहरे अउर मे करै हइ
बड़का-बड़का पार्टी आ सम्मेलन
गाम अउर मे हमरा सुहून के
नञि बुझै हइ मैथिल
हमरा अउर के बुझै हइ छोटका
गिरहत अइजग एक दिन
बजलियैक आ बैसि गेलियैक
खुर्सीये पर
फज्जति कऽ-कऽ
उठा देने छल गऽ बभना
हमरा अउर नञि बुझै-गमै हियै
`मैथिली` हइ हमरा अउरक भाषा
सब दिन वएह अउर बुझलकै
माने बिदापति हइ ओकरे दादा-परदादा
ई युग हइ लोकक कहबी हइ....
`दस टके नञि नितराइ दस सगे नितराइ`
कहाँ करै जाइ हइ कहियो
राजा लोरिकक समारोह
देवता सलहेसक फंगसन
कारिख पजियारक गबै हइ कहियो गाथा?
याद करै हइ कियो कहियो
बंठा चमार के? करौ ने एकर
परचार-परसार
गाम-घर चौक-चौराहा पर
देखियौ ने छीनि लेतै कियो
हमरा अउरक भाषा
ककर बापक दिन हइ
सिर लेबइ वा सिर कटा देबै

●●●

मुखौटा

बाजार वादी व्यवस्था
गामो के शहरी मुखौटा
पहिरा देलकैक
आब लोक नहि-जन नहि
भऽ गेल उपभोक्ता
अकचकाइत
बानदास पुछलकैक खखना सँ
ई अदला-बदला
कहिया भेलै रौ खखना?
उपभोक्ता भेलासँ तऽ
हमरा सुहुनक सम्बन्ध
नञि बनैत छैक समाज सँ
उपभोक्ता वादी व्यवस्था
तऽ दुख दर्द मे
सहानुभूतिक भाषा बिसरा देतै
आब नहि देतै कियो ककरो
बेर-बिपत्ति मे संग
नहि छै ककरो समय
पहीरने अछि सब
अन-धन लछमी आ ओहदाक मुखौटा
आब कहाँ-ककरो सँ कियो बजै छै भरि मुँह
हँसी-मजाकक बात तऽ दूरे रहल
जे खोलइए सब गामो मे आब
अंगरेजिए बोतलक मुन्ना
अपने मे रहै छै सब मदमस्त
घमंड मे भेल चूर
गमइया जीवन सँ कऽ रहल अछि
तुम्मा-फेरी

गामक खुजलाहा वातावरणमे
लोकके लगै छै मनुगन्ह
बिना बेगर्ते नहि निकलैत अछि बाहर
कतौ-ककरो ओहिठाम नहि जाइ छै बिनु बजौने
पहीरने रहै छै गामोमे लोक
चकमक चोन्हयाइत अर्द्धनग्न
परिधान
बानदास फेर पुछलकैक-खखनासँ
ई अदला-बदली कहिया भेलै
रौ खखना?
देखइ नहि छहक नूनू बाबू गिरहतकें
अबै छै शहरसँ गाम
बहराइत छैक एको शबद ज्ञानक
जेना वाक् हरण भऽ गेल होइक
विदेशी नाहित निकलि जाइत छै
मुसकियाइत
एनमेन शहरे जकाँ
खखना बाजल बानदास सँ
हे... हौ... काका
गामो-पहीर लेलकऽ
शहरी मुखौटा हौ काका
गामो-पहीर लेलकऽ
शहरी मुखौटा हौ काका...

•••

टूटि रहल संवेदनाक डोरि

कविताक इतिहास
समय - समाज सँ जुड़ल
सार्थक - विद्रोहक - विलक्षण बिम्ब
क्रांतिकेर आवेग
विविधतासँ भरल जीवनक
कविताक लेल कतेको अछि कथ्य
शहरी जीवनक यातना
गामक टाँगल यथार्थक फोटो
झूलि रहल अछि हमर सामने
हम संघर्षशील भेल अपन अस्तत्विक लेल
अमानवीय बनल मनुख
राजनीतिक फाँस मे
पड़ल कतेको लाश
तकैत माय-बाप
अपन संतानक देह
शिक्षक, डॉक्टर, वकिल
व्याख्याता, अभियंता, साहित्यकार
पत्रकार आदिक दिश
मडैत संवेदनाक भीख
मुदा ओ देखि रहला अछि
क्रूड़ अमानवीय आँखिसँ
अपन सुदृढ़ पक्ष
कोना बनता सुखमय जीवनक बिम्ब
संवेदनाक नजरि मे भेल छनि मोतियाबिन
न्यायमूर्तिक आँखि सन भेल जा रहल बन्न

सरकार कऽ रहल प्रचार
जे करता हमर गुणगान
हुनके भेटतनि मान-सम्मान
प्रबुद्ध पदवी धारी उतारि अपन चोला
भऽ जाइत छथि ओहि पँतिमे ठाढ़
बिकाइत अछि पत्रकार
मौज मे रहैत अछि साहित्यकार
कोना भेटत कोनो पुरस्कार
संवेदनाकें तिलांजलि देवा लय
भऽ गेल अछि तैयार
की कवि वा कविता सँ
बदलि सकैछ संसार।

•••

मोबाइल

मोबाइल-मोबाइले टा नहि बुझू एकरा
ई थीक ओझा गुनीक देल जंतर
तें सब रखने अछि
सदिखन देह सँ सटाकऽ
नञि तऽ लगा देतै कोनो डाइन-जोगिन
नजरि-गुजरि
भऽ जयतैक ओकर दिन-समय खराप
गेल रही मंदिर पर, हाथ मे छल मोबाइल
पंडित जी देलखिन चन्द्रोगत
कोना-ने कोना एक बूंद खसि पड़लैक
मोबाइलक चारजरवला भूर मे
उठैलक चीङ दऽ... ई की भेलै !
डेरा गेल रही... धरफड़ा गेल रही
मति छिन्नू भेल... मोन मे आयल
डाइन ने मारलक अगिनवान
देह भऽ गेल रहय पानि-पानि
अनोन-विषनोन जकाँ भऽ गेल रही
दौड़ल-दौड़ल गेलहुँ मिस्त्री लग
चारू कात देखि-सूनि कऽ कहैत अछि
मालिक ई तऽ मुँह बाबि देने छै ।
आ अइ मे राखल हमर सम्पत्ति
तऽ से सब नष्ट भऽ गेल
हम लगलहुँ घिघियाय....
जेना हमर प्राणान्त भऽ रहल हो ।

•••

स्मृतिक अंक मे गोधरा

ओहि दुरस्थ प्रांत मे
जतऽ जड़ले... उजड़ल देखैत छी
ओही ठाम छलैक एकटा खूब
घनगर बस्ती
जतय छलैक सब जाति आ धर्मक लोक
सड़कक ओहि कात मे छलैक एकटा मस्जिद
आ अइ कात मे छलैक एकटा मंदिर
एही विशाल परिसर मे लगैत छलैक
महामिलनक मेला...
के हिन्दू के मुसलमान
सब घुमैत छऽल....
आ आनन्द सँ दिन बितबैत रहय।
एकदिन झंझावत-झकोर गर्जना करैत
उठलैक गोधरा टीशन पर....
मनुखक हुजूम...
बेसुधि...सुख सँ सूतल-पड़ल
तीर्थ यात्री पर... किछु अज्ञात लोक
पेट्रोल-डिजल छिट-छाटि कऽ लगा देलकैक आगि
रेलक डिब्बा संग जरि कऽ सुड्डाह भऽ गेलै
किछु तीर्थयात्री
ओहि दुर्दिनकें स्मृति मानि
किछु दुष्ट लोक शुरू कएल
महानाशक क्रीड़ा... जाहि मे समाहित भेल
ई बस्ती.... एहि बस्तीक लोक
कतऽ गेल... मस्जिद
कतऽ गेला...अल्ला-ताला
कहाँ गेल....मंदिर...

कहाँ निकलला.... राम-लला
मात्र बहरेलैक एहि बस्तीसँ
ई अन्हरी बुढ़िया...
जकर चारिटा बेटा मारल गेलैक
नहि भेटलैक अनुदान
आ ई अधबयसू मौगी....
मारल गेलैक घरबला आ नेना
खा लेलकैक अनुदानो...
अपने सहोदर...
आब दुनू मंगैत अछि भीख....
आ मौगी करैत अछि देह व्यापार...
से बुझियौक ई संयोग जे अइ मे एकटा छैक हिन्दू
आ एकटा छैक मुसलमान..?

●●●

महानगर

हम जखन अपन बासा दिश
होइत रहै छी आपस
तखन महानगर अपन कोलाहलके
समेटइत रहैत अछि
आ तकरा ओजी पर
पसरि जाइत छैक एकटा चका-चौंध दुनियाँ
बिजलीक छिटकइत इजोतमे
एकटा प्रौढ़ा सुंदरी
अपन समस्त दु:खक आवरणकें समेटि
बिजलीक चोन्हयाइत प्रकाशमे
मुस्कियाइत कोनो नवयौवना सदृश
अपन अवशिष्ट यौवनक विक्रय
करऽ मे लागल रहैत अछि
बुझू तखन शनैः शनैः पसरि
जाइत अछि ई बाजार
हम परम शांत पथिक समान
आगू बढ़ल जाइत छी
तखन आत्मग्लानि सँ
हमर समस्त अस्तित्व झन-झना
जाइत अछि

●●●

तलाक

एक्कावला पुछलकैक
की रौ छौंड़ा !
कतऽ छलें हऽ...
लेवा पर छौंड़ो
तलखिये कऽ कहलिकैक
`फत्ती आबि गेलइए
केऽ ?
`फातिमा....`
छौंड़ा मुस्कियाइते कहलकै
आ.... भभा कऽ हँसि देलकैक
साँचे हो?
`तोरे से कबहू झूठ बाजलिय ह`
तोरे सप्पत
अल्ला कसम एतवार करहू
ओकरे अम्मी सेहो
संगे-संगे छलइय`
की बोलै हइ रै?
`हौ !
फैसला करे अलइय`
बसीर मियाँ से`
छौड़ा लापरवाहिये मे कहलकैक
गेल छलइय काजी के इहाँ
एक्कावला तेजी सँ
कहलकैक ओही जगुन जो
छौड़ा बाजल तलाक भे गलइ हो
बेटा केकर भेलइ?
फातिमा जोड़ से कहलकै रहा
अपन बापकें

से सब बुझै हइ, मुदा बाप के?
बसीर मियाँ
दे दहू बच्चा बसीर मियाँ के।
सुनैत मातर बुझू एक्कावला के
लहरि-चुट्टी काटि लेने होइक
बेटा ककरो आ
बाप ओ...

●●●

मर्यादाक प्रतीक - पाकड़ि गाछ

गामक चौबटिया पर
छल एकटा `पाकड़ि गाछ`
समाजक सेवा साधना मे
तपस्वी सदृश छल तल्लीन
छल बनल कोनो त्यागी सदृश
सरस समाज`क सहयोगक साधक
हरियर कंचन रूप अपन लय
पथिकक बनल रहै छल विश्रामक घर
गामक लेल
शोक-दुख-कष्ट निबारक
बनल रहै छल घर-आङन, दुरा-दलान
बाल मंडलीक छलै ओ खेलक मैदान
दूर-दूर तक कीर्त्ति एकर छल पसरल
गोर दूइएक विगहा मे छल ई चतरल
तें बाट-बटोही गौंआ घरूआ
शहर-बजार मे कहै छलैक
पाकड़ि गाछवला मौगलाहा गाम
से आब कहाँ छै बौआ नञि रहलै
पाकड़ि गाछवला मौगलाहा नाम
सहि दुख-कष्ट-व्यथाकें
बहुतो दिन धरि केलक सेवा
मुदा लोक एखन कहै छै
महिषी बाबा मरलै जहिया,
बिनु बसाते डारि एकटा खसलै तहिया
ओहि दिन सँ परा गेलै
एकर ओ अपन चक-चक्की
लूह-लुहारपन
सब नीक-अधलाहक देखने छल

ई पाकड़ि गाछ...
चमड़टोलीक रगड़ा
मास्टर साहेबक झगड़ा
ब्राह्मणक भड़ेकेनाइ
भूमिहारक लड़नाइ
अमातक विलखनाइ
देखने छऽल पाकड़ि गाछ सवहक
नाङट रूप सूट-बूटवला रूप
सत्य सऽ भगैत रूप
देख कऽ भऽ गेल छल ओ हतप्रभ
एहनो भऽ सकैत अछि मनुखक रूप
हमरा गामक उपद्रवीक जत्था
पूजाक बहन्ना कऽ कटैत रहल डारि
बकरीक बास्ते तोड़ैत छल पल्लो
गाछ कनैत रहल, लोक हँसैत रहल
सभ बनल रहलै वे परबाह

सुतल छलहुँ नींद सँ
कनैत वृक्ष आबि कहलक अपन हाल
विवेकहीन भऽ गेल मनुख, बिगड़ि गेल अछि समाज
छोड़ि रहल छी हम अहाँक गाम
हठात् नींद टूटल-देखलहुँ जा रहल छलाह
गामक मर्यादाक प्रतीक पुरुष
पाकड़ि गाछ।

•••

सपना

नेनपनमे अपन,
सखी बहीनपाक संग
खेलाइत-धुपाइत कनियाँ-पूतराक खेल मे
सपना देखैत छल...
हमरो वर अओता
मोटर कार पर
घुनेश पाग पहीरने
हमहू पियाक गाम जायब
महफामे बैसिकऽ
से भगवानकें ओकर ओ
सपना नीक नञि लगलनि...
बिआह जखन भेलैक
ओकर वएह वर
मारि देलकैक
मोटर-बाइक लेल।
ओकर आनन्दक ओ इंद्रधनुषी सपनाक
सब रंग धोखरि गेलैक
कारी रंग मात्र पक्का
वएह टा मात्र बचलै।

•••

भूत-बसेरा

साहित्यिक साधना / समालोचना /
शब्द विन्यास / पदक लालित्य /
अलंकारक छवि-छटा /
रसक परिपाक / छन्दक गरिमा /
साधक गुणी महात्मा / आत्मप्रशंसी /
मात्र अपन तीन-चारि / पोंगा पंडित लग /
रहि गेला बैसल / गप्पक ढेरूआ कटैत /
ई थिकैक / अर्थ आ समांगक युग
दैत बड़का उपदेश / धोधि भरने छथि /
कहीं छिना ने जाइन / हुनकर ओ बपौती घर /
घर मे ओ / तें घरक महत्व /
मैथिली माने वएह / तें मैथिली /
मैथिलीक इज्जति / हुनके दुआरे बुझैत
अछि लोक ! आब लोके नहि /
घर नहि / परिवार नहि /
वएह / खाली वएह / हुनकर महत्व /
आब ओहिना / बिनु घरनी घर भूत बसेरा
घर-भूत बसेरा।।

●●●

दाव-पेंच

पढ़लहुँ विज्ञापन
आवश्यकता अछि व्याख्याता`क
गद-गद मोन
डिग्री सब नेने पहुँचलहुँ
महाविद्यालयक द्वारि पर
सचिवक नाम देखि
झँकलहुँ चेम्बर दिश
देखैत छी ओइ कुर्सी पर
हमरे बालसंगी छल पदासीन
ठिकियेलहुँ, वएह अछि? ता
श्रीमान् पुछि बैसलाह....
कोना आएल भेलह एतेक दूर
बातक शिकायत तऽ
बाल्याकालहि सँ छलहु
हमहूँ पूछि बैसलियैक
कोना एतेक जल्दी आगू बढ़ि गेलहक?
हाइये-स्कूल मे लागल रहऽ छह बरख
ओकर बादे कॉलेज खोलि देलियैक
आब पढ़लहे-लिखलहे के पढ़बैत छी
जे-जे मोन होइछ सएह सब करैत छी
छात्रवृत्ति उठबैत छी
परीक्षा केन्द्र बनबैत छी
हमरा मोन मे भेल जे उच्च शिक्षा मे
एकटा विषय होइतैक दाँव-पेंचक
जँ सीखने रहितहुँ हमहू.....
तँ नञि खइतहुँ धक्का
तखन बनल रहितहुँ हमहूँ
कतहु कोनो लोक बड़का ।
•••

हंता

हंता....!
समान क्रूरता सँ....
मारैत छैक लोक कें
मृतकक ओहि खून सँ....
सानल माउस के देखि कऽ
होइत अछि आनंदित
होइत अछि गौरवान्वित....
अपन पुरुषार्थ पर....
नहि पड़ैत छैक कोनो फर्क....
जे मृतक हिन्दू अछि कि मुसलमान
किंवा क्रिश्चयन हो कि बौध भिक्षुक
धनीक रहौक वा गरीब
सवर्ण होउक वा दलित
समान भावसँ करैत अछि ओ
सब पर आक्रमण
नहि देखैत छैक रूप-रंग, जाति-धर्म
तें हंतासँ सब खुशी....
पिछड़ा बुझैत अछि - `हंता` सामंतवादक
विरोधी अछि
अगड़ा बुझैत अछि जे हमरा
लग एकटा बलशाली पुरुष अछि
परंपरावादी बुझैत अछि हंता-सांसारिक अछि
तें हंता कें सब अपन-अपन चश्मा सँ देखैत अछि
आ रहैत अछि सब खुशी आनन्दित
हंता खुशी, जे ओकरा धंधा मे

मंदा नहि छैक....
दुःखी मात्र हमरे सन-सन लोक
जे हंता तऽ हंते अछि
मारैत तऽ छैक कोनो लोकेकें
आ अनाथ होइछ कोनो....
नेना-भुटका आ परिवार
जे बनि जाइत अछि समाजक
उपर-भार

•••

अद्‌भुत समय

अद्‌भुत समय
हत्यारा बँटैत अछि पुरस्कार
हत्याक खिलाफ
होइत छैक कनिको लाज
झलकैत छैक
ओकरा मुखमण्डल पर केहेन
गौरवक विराट रेखा
लेबऽवला सेहो भेल अछि
गौरवान्वित आनंदित
हमरा संग हमर पितर
देख रहला अछि सबटा हाल
भारतक मानचित्र पर
मिथिलाक
विशिष्ट सभ्यता-सहिष्णुताक
अछि इतिहास
बिगड़ि रहल छैक मनुक्खक
जीवन दशा...
हमरा संग हमर पितरक
अकुला रहल छनि आत्मा
भऽ रहलाह अछि खिन्न

•••

हेराइत भाव - बिसराइत शब्द

प्रकाशपुंजक सम्पर्क..
सत्यक बोध...
अज्ञानताक तिमिर जखन छटैत अछि
तखन होइछ भावक स्फुरण
मारय लगैत अछि भीतरे-भीतर
शब्दक लहरि
तखन उगैत अछि कविताक
एकटा पेंपी
कविताक ई पेंपी
हमरा दैत अछि आशा-हिम्मत-साहस
आगू बढ़बाक ताकत
अपन पीढ़ीसँ दूर-बहुत-दूर जेबाक प्रेरणा
हमर पीढ़ी भऽ गेल अछि बेठुआ
बिसरा गेलैक हमरा पीढ़ीकें
अपन इतिहास-भूगोल-समाज
एहि एक्कैसम शतीमे
जतय करैत अछि हमर पीढ़ी विश्विबिचरण
अपन सम्बन्धसँ कतराइत
करैत अछि हत्या-चोरी-घुसखोरी-घोटाला
बलात्कार-बलजोरी
मानवताक दैत तिलांजलि
करैत अछि अपन आबऽबला पीढ़ीक
सतौना-पुरूषाक इंतजाम
देखकऽ लागि जाइत अछि बकझर
तखन हेरा जाइत अछि भाव
बिसरा जाइत अछि हमर अपन शब्द
हमरा हुअऽ लगैत अछि आश्चर्य
घोर आश्चर्य, परि जाइत छी सोच मे
तखन ई कोन वीर्यक अछि..
हमर ई पीढ़ी !

•••

उग्र चेतना

उग्र चेतना-प्रेरित मैथिल
स्वनिर्मित अहंकारक अकड़मे
वर्णव्यवस्थाक आड़ दय
बँटैछ चिरस्थापित रूढ़िवादिता
ताना दैत बारंबार कहता
हम बड़का तों छोटका जाति
गर्वित मोने उद्‌घोष करैत
महाकवि विद्यापतिक मिथिला
अम्बरसँ अवनितल तक
अभिव्यक्ति भाषा मैथिली
मुट्ठी भरि लोकक दम्भक
शिकार भेल श्रमिक समाजसँ
त्यक्त उद्रिक्त पीड़ित स्वर
सुनबामे अबैछ भाषा मैथिलीक

•••

पिशाच

ओ जे तोड़ैत अछि पाथर
फोड़ैत अछि गिट्टी
एहि बैशक्खा टह-टहुआ रौदमे
सद्यः आगि सन
लह-लह लूमे
भेल लहालोट
टुकुर-टुकुर देखैत अछि
ओहि महल दिश
छथि ओहि ए.सी.घरमे
गलीचा दय बैसल
मनुख रूपमे
बनल अछि पिशाच
गुड़रैत रहैत छैक एना
जेना चूसि लेतैक
ओकर ओ बचलहो खून

•••

अद्भुत विकासक रस्ता

अद्भुत अछि ई
विकासक रस्ता
नहि बुझि रहल छियैक
एकर कोनो सूत्र
प्रकृतिसँ राखू कम सरोकार
विचार शून्य - विवेकहीन भेल
समयक खूब करू उपयोग
मनुखक सम्पर्कसँ होयत
व्यर्थ समय नष्ट
लोकक संग कयलहुँ
विचारक आदान-प्रदान
तखन भेलहु पुरान पंथी
जतेक करू सिमित गप्प
नहि लियौक खोज खबरि
तखन भेलहु अहाँ
प्रबुद्ध वर्ग
सामान्य लोक जनसँ
कयलहुँ गप्प
तऽ कहाँ रहलहुँ कोनो जोगरक
राखू अपन भावनाक अभिव्यक्ति
फेसबुक आ अपन `ब्लॉग` पर
देख लियऽ अपन महत्व
भौतिकताक सुख-सम्पन्नतासँ
रहलैक मनुखक सरोकार
जखन मनुष्य अपने सत्य अछि
तऽ फेर किएक कानल रहय
उत्तराखंडक बाढ़िसँ
फेर किएक जम्मू-कश्मीरक बांढ़िसँ
मचौने अछि हाहाकार

●●●

मरीचिका

नऽव पश्चिमी संस्कृति
मरीचिकाक समान
चम-चमाइत इजोत
इजोतपर मृगक समान दौड़ैत लोक
तकइत अछि हरियरी
ओहिपर.....
टाँगल रहैत छैक ओकर
आकांक्षा
आकांक्षाक पूर्तिक लेल मनुख
बनैछ
मुसाफिर वन-वन
भटकैछ
तकैत-फिरैत अछि
उर्वर भूमि
जाहिठाम ओ शीघ्रे बनि जाइ
सम्पन्न धनिक
तखन धारण करैछ मनुख
मशीनीरूप
पुनः ओ भऽ जाइछ एकाकी
आ खिन्न
पश्चात् तकैत अछि एकटा
सुरम्य प्रदेश
ओतय ओ कीनैत अछि
सहानुभूति ओ.....
बोतलमे बंद भेल खुशी
ओ आनन्द
तखन ओ बिसरि जाइत अछि
ओहि ठाम
मूल देश अपन ओ गाम
जतय बिसरि आयल अछि अपन ओ खुशीक खजाना

●●●

सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम्

शब्दक सृजनशील कविक
शिल्प होइछ कविता
कविता कविक
कलात्मक रूप अछि
कविक प्रतीकात्मक रूप अछि
प्रतिक्रियाक भाव अछि
तें कविता मे
व्यंग्य अछि... विनोद अछि
दर्द अछि...क्रोध अछि
प्रेम ओ प्रतिशोध अछि
दर्शन ओ बोध अछि
मनोविश्लेषण ओ उपदेश अछि कविता
यथार्थक निवेद्यकें निर्वस्त्र करैत अछि कविता
अनुभूति जन्य परिवेशकें
विस्तार करैत अछि कविता
भावक प्रसार करैत अछि कविता
कवितामे सामंजस्य अछि
कविता वेगवाहिनी प्रवाहक धार अछि
कविता स्वांतः सुखाय अछि
कविता बहुजन हिताय अछि
नित-नूतन समस्याक जगजियार करैछ कविता
कवितामे कविक मर्म अछि
कवितामे कविक धर्म अछि
कविता कविक कर्म अछि
तें कविक लेल
सत्यम-शिवम् ओ सुन्दरम् अछि कविता।

●●●

जीबते छैक जमींदार

आकंठ डुमल
अनैतिक खेलमे मुदा,
की बनौने अछि सुंदर स्वरूप
अंग वस्त्र की पहीरने अछि
लगैत अछि कोनो
संत महापुरुष
देखने रहियैक ओइ दिन
एकरे हाथ मे तमंचा
संध्याकाल अपन पोसलाहा
गुडांक संग मिलिकऽ
मारैत रहै एकटा
ठेलावलाकें से
दोष मात्र एतबेटा
जे चछा गेल रहनि
हुनकर चरिचकिया कार
कहब की से मारैत-मारैत
खून बोकरा कऽ मारिये देने रहै
देख कऽ मोन पड़ि अयलाह
`मधुप जी` आ हुनकर रचना
``घसल अठन्नी ``ला रौ मखना
बेंत फेर सूगबूगेलौं``
युग लेलकैक करोट
पश्चिमी सभ्यताक कतबो
भेलैक अछि परचार
मुदा एखनो धरि़ जीबते
छैक जमींदार
मुदा एखनो धरि जीबते
छैक जमींदार।

•••

कवि : कवि नहि थिक हरबाह

हरक नासक सदृश
कवि अपन कलमक नोक सँ
जोति दैत छैक उज्जर दप-दप
पेजरूपी भूमि कें
बाउग करैछ अपन भावना रूपी
शब्दक बीया
वएह बीया बनैछ गाछ
जे एक दिन दैत अछि
सु-स्वादु फल
तखन छटैत अछि समाजक
आँखिपरसँ अन्हरजाली
फेर बुझऽ लगैत अछि लोक
रोटी मे नुकालय भूख
जे बनैत छैक कोनो क्रांतिक
उद्गम स्थल
कविक शब्दमे होइत छैक
विचित्र करामात
उठबैछ समाजक बीच कोनो
यक्ष प्रश्न
फुकैत अछि क्रांतिक बिगुल
उठैछ पुनः एकटा चक्रॉत
क्रांति चेताकें चढ़बऽ
चाहैत अछि फाँसी
फाँसी मात्र सँ नहि होइछ
कोनो

क्रांतिक अंत
जेना हरवाह अपन मेहनत सँ
भूमि कें जोति-कोरि कऽ दैत अछि
जीवनदायी अन्न भोजनक सामग्री
तहिना कवि अपन भावनाके
उकेरि कऽ समाज के सीखवैत अछि
जीवन जीवाक महत्त्व
तें कवि कवि नञि
थीक हरवाह

•••

कवियो भऽ गेल बदरंग
आब हमरा उठि गेल अछि
बिसवास
कविताक ओहि भावना पर सँ
जे कविता दैत छैक रोटी
ककरो रोटीक लेल
लिखऽ पड़त कविता
आब समाजक प्रत्येक व्यक्ति
भऽ गेल कवि.... आ
ओकर मुख सँ बहरायल
शब्द भेल ब्रह्मवाक्
कवि कोन रूप
कोन भाव सँ रक्षा करता
ब्रह्मवाक्‌कें जे ओ
समाजक लेल नहि
हुनका वास्ते भेल समाज
कवि कहियो समाज लेल
लिखैत छलाह कविता
आ नुकायल यक्ष प्रश्नक लेल
भड़ैत छलाह हुंकार
करैत छलाह शंखनाद
जाहि सँ ढहि गेल रहैक
रूसक जारशाही राज
फ्रांसक लूई 16वाँक शानो-शौकत
बैमानीक राज
अमेरिकाक राजशाही

ब्रिटेनक बंशवादी-व्यवस्था
भारतक जमींदारी प्रथा
आब वएह कवि लिखैत छथि
कविता पर कविता
बनबैत छथि पोथी-पर-पोथी
समाज जहिनाक तहिना
किएक तऽ कवियो भेल रहैछ
अपन रचनाक संग बेदरंग ओहिना

•••

बड़द भऽ गेलै बेरोजगार

बड़द भऽ गेलै बेरोजगार
मशीने सँ भऽ जाइत छैक
सब जोगार
खाहें खेती होउक
बा दउनी
निपौनी तऽ करैत अछि गंध
प्लास्टर पर आब नञि छैक
एकर कोनो काज
गन्हाइत रहैत अछि एकर ढेरी
बेकल भऽ जाइत अछि मोन
बइसनाइयो भऽ जाइत अछि आफद
गोरहा-चिपरी
लगैत छल किछु काज
से आब गैसे पर बनैत
अछि भोजन-भात
रखने छी ई जोड़ा गाय
से बिजनेसक अछि आधार
दूध आदिक बस्तुजात बिकाइए जाइत छैक
आ सबसँ बेसी
छैक एकर बच्चा जे
बिका जाइत छैक चिक्कन
दाम पर
बंगला देशी पैकारक हाथ

•••

चोटगर समाचार

आस्थाक मजगूतगर राइसमे
बान्हल समाजक मोन
बुझू एना जेना छैक
ओकर अपन दैनिक चर्जा
नञि रहैत छैक
ककरोसँ ककरो राग-द्वेप
मंदिर-मस्जिद गिरजाघरक
आइन अपगराइन सुहृदयी भेल
सब रहैत अछि अपन नेम-टेमसँ
हुनके सबके रहैत छनि मीन-मेष
जे नञि जरबैत छथि
बिनु स्वार्थे एकोटा अगरबत्ती
हिनके सबके होइत छनि
अल्ला-ईश्वरसँ
हौट लाइन पर गप्प-सप्प
इएह धर्मक धुरंधर...
मुल्ला-पंडित-नेता-पत्रकार
बजैत मातर रोपता फसाद
हिरामणि सुगा सदृश बनता भविष्यवेत्ता
हिनकर रूप-रंगसँ
चिन्हबामे वंचित रहि जाइत अछि समाज
तखन बनि बैसैत छथि ई समाजक नेता
जनताक खून पीबि
भऽ जाइत छथि लालवूंद
रइसजादा-राजगद्दी पर भेल आसीन
बैरागी रूप त्यागी बनल
ओहिना जहिना पौक बला धारक कछैरमे
ओ बाघ जे छऽल बैसल

सोनाक कंगना लऽ कऽ
आ लोभी पंडित बनिगेल छऽल शिकार
बैसल सूति-पाति लऽ कऽ त्यागी बनल
देख कऽ लोभी पंडितक समान
फँसि जाइछ निरिह लोक
ओकर चक्रब्यूहक चालिमे
अपटी खेतमे रहैत छैक जान
तखन सियार सदृश देखैत पत्रकार
अबैत अछि दौड़ल-दौड़ल
पुछैत अछि कहू समाचार
कोना भेल एहन हाल
लगबैत अछि ओहिमे
नोन-तेल-मिरचाइ
तखन ओ बनैत छैक चोटगर समाचार
देखबैत कहत ई थीक हमर विशिष्ट खबरि
लागल नेता-पुलीस-मुल्ला-पंडित-पत्रकार
सबहक मोनमे छैक रहैत लागल लिलसा
अइमे ककरा कते माल भेटतहु रौ भजगार
अइमे ककरा कते माल भेटतहु रौ भजार
अइमे ककरा कते माल भेटतहु रौ भजार

•••

भीतरका टीस

मशीन विज्ञान आ अर्थ
पर आधारित
कम समय कम लागत
आमदनी बेसी
सँ जुड़ल अछि समाज
मौजे काका
बुझि गेला ग्लोबलाइजेशनक खेल
गमला नहि
बेची अपन ई दुनू बड़द
पाँच कट्ठा खेत
समारैत-समारैत होइछै साँझ
किनला हरजोता
कम समय आ कमे लागत
पर होइछै खेती
हाथो पर रहैछ हजार-दू हजार
छूटि गेल मुँहतक्की
हरबाह आ जोनक जे
करैत छलहुँ पमौजी
उपजा बाड़ी भऽ गेल बेसी
मारैत अछि भीतरे-भीतर टीस
अन्नक स्वाद भऽ गेलै पनिसोह
यौ मास्टर काका
इएह छैक एहि युगक मोल
रहलै कतौ समरसता
देखैत नहि छियौक मनुखो भऽ गेलछै
केहन निस्सठ कठोर

•••

घमंडक गंध

शब्द खिलखिलाइत अछि
कागत पर
मुदा दलमलित होइछ समाज
जेना शब्दक स्पर्श होइछ
लोकक़ गात-गात सँ
कंपित होइत देह
जेना कोनो बाद्ययंत्र सन
पुरूषार्थक घमंडमे
लगा रहल आगि कियो
शहर-गाम-घर-समाजमे

•••

पश्चिमक फेरन

धुआँक ओ रूप
जे आकाश पहाड़ आ वृक्ष`क
सदृश देखाइत अछि....
से ई हरियर-हरियर खेत पथारक बाद
जे ओ विशाल कलम-गाछी
तकर ओहि पार छैक
एकटा विशाल चिमनी
तकर छी ई धुआँक
बुमकारा...
गाछ-वृक्षक काया`क भीतर
हम नहि देख
पवैत छी...
ओहि चिमनीक लतरल-पसरल
लौहकाया
हमर दृष्टि पड़ि जाइत अछि
आब मद्धिम
गाछ-वृक्ष`क डारि-पात`क झोंझमे
ओ अपनाकें नुका बैसल अछि
आ हमरा जीवनकें जे
हरित-भरित शस्य श्यामलाक
आलिंगन प्रेम प्रगाढ़ताक संग
आह्लादित करैत अछि
से झरकि रहल अछि
ओहि धमन भट्ठीसँ
दहकति आगिक ज्वालाक

गन्ह करैत कारखानाक
प्रदूषणसँ नरक भेल
दम घुट्ट हमर जीवन
मुदा हम चमकैत छी
नव औद्योगिक नीति लए
पहीरि पश्चिमीक फेरन
आ चमकैत चलि जाइत छी
बदलैत छी कहाँदनि हम अपन समाज

•••

जननीक आँचर

शिष्ट !
मर्यादावान्
मंचपर आसीन
महापुरुष प्रवर विद्वान
मोह-मायाजाल रहित
शब्द जाल बुननिहार
मिनटहिमे भाषाक विलीनताक
शंका उठि ठाढ़ भऽ जाइत छनि
मिटा जयतैक मैथिली भाषाक नामोनिशान
साहित्यिक सम्पन्नताक सुधि नञि छनि
दू-चारि कविता कथा वा दू चारि
विद्वानक चर्चा मात्रसँ, साहित्यिक साधना
एहि ए.सी. घरमे संभव नहि
बुद्धिक सम्राट
की संवेदना शून्य भऽ गेल छथि
झूठक पूल बन्हैत काव्य विवेकक अर्थ नष्ट करैत
दिन प्रति-दिन एकटा नव
सत्यक उदाहरण दैत एतऽ
सुख-सुविधाक मोहजाल मे छथि पड़ल
कहियो गामक ओहि सुदूर प्रांतमे
भूख सँ बिलखइत बिनु कपड़ा-लत्ताक
जाड़ सँ कंपैत ओहि बेदराक
अंतरमनमे उतरि कऽ देखियौक
ओकर जननीक आँचर तरमे
सुखायल छातीमे नुकायल अछि
हमर भाषा साहित्य ओ सभ्यता

•••

दुखक-पुरक सुख

दुख कहलकैक सुखसँ
हमरे संगे रहैत छऽ सदिखन
जखन मेहनतक पसेना निकलैत छैक
ताहि समय मंद-मंद हवाक संपर्क
केहेन आनन्दक क्षण रहै छैक !
हौ भाइ ! कयल गेल मेहनत सँ
उमरैत अछि तोरा सँ प्रेम
मुदा तोरा हमरासँ होइत छऽ घृणा
हमरो भऽ जाइत अछि तोरासँ द्वेष
ओना हमहीं कहैत छियैक
चाही एकरो सुख
जकरा मारिकऽ बैसल रहैत छैक
कोनो दानव शक्ति वला मनुख

•••

दुविधा

जाहि संसारमे भेल अछि
हमर उत्स
से प्रकृतिक छनि आदेश
करू अहाँ सर्जना-अर्चना ओ रचनाक
सविस्तर यज्ञ
मुदा हम फसि जाइत छी
मायाक मकरजालमे
अपन उद्देश्य धरि पहुँचबाक लेल
करैत छी ककरोसँ दोस्ती
तऽ ककरोसँ दुश्मनी
केहेन विरोधाभास अछि हमर जीवन
धिया-पूता ओ परिवारक चक्रमे
प्रकृतिक देल संस्कारकें
बुझैत छी मिथ्या
मोह-मायाजालक दुविधामे
तकैत रहैत छी सत्य
एहि संसारमे
होयत नहि हमर अंत
हम रहब, आ हमरे
रहत ई संसार

•••

प्रश्नकर्त्ताक मुँह बंद करू

जखन कोनो व्यवस्थाक विरूद्ध
उठैत छैक गप्प
न्यायक देवी
मुनने रहैत छथिन्ह अपन दुनू आँखि
कयल गेल कतेको प्रश्न
से आइ धरि रहल अनुत्तरित
निष्पक्षताक लेल करैत
रहल गोहारि विग्रह
शंकित दृष्टिएँ देखल
जाइत रहला प्रश्नकर्त्ता
अपने अपना ढंगसँ
गढ़ि लेल जाइत अछि
मानवताक परिभाषा
नियम आ कानूनक अढ़ऽमे
अपन बल-बुत्तासँ
उत्साहित ओहि प्रश्न कर्त्ताक
मुँह कऽ देल जाइत छैक बंद
कुंठित भेल ओ...
समाजसँ करवा देल जाइत छैक
ओकरा बहिष्कृत
रचल जाइत अछि एकटा साजिश
आ फेर प्रश्न करबाक परंपरा के
कऽ देल जाइत अछि समाप्त

•••

घूड़ि ताक रौ मुरहा

हमरा आब अहाँक संग
नहि लगैत अछि नीक
अहाँक विचार आ भावनाक
अभिव्यक्ति
पहुँचवैत अछि हमरा चोट
हम काटय लगैत छी बपहारि
अहाँक देल चोट
हमरा कऽ दैत अछि वेसूधि
हम बिसरि जाइत छी
अपन समाज आ दायित्व
अहाँ सबकें जाहि लेल
भेटल एतेक बड़का
तगमा....
ओही तगमा सँ चिन्हैत
अछि लोक आ समाज
से कहि दैत छी
जेना चिन्हलहुँ हम
चिन्हत हमरे जकाँ कियो आर
सत्ते-सत्ते कहि दैत छी
सहजहि हुअय लागत अहाँसँ दूर
अहाँ चिकरैत रहबै
करैत रहबै सोर...
ओहि डैनियाँ नाहित
जे श्मशान सँ करैत छैक किलोल
घूड़ि ताक रौ मुरहा
मुदा नहि तकैत अछि पाछू
किएक तऽ ओकरा नहि
हेबाक छै जरि कऽ भसम।
●●●

कवि-गोष्ठी

जमल छल कवि गोष्ठी
उद्घोषक छला मग्न
नहि भेटल छलनि एतेक श्रोता
आइ धरि कहियो एक संग
बैसल छला गलीचा दय
सरस्वतीक वरद-पुत्र कवि-गण
सब छला गुम-सुम
कियो बढ़ौने छला दाढ़ी तऽ
कियो बढ़ेने छला केश
किनको टुटल छलनि बुट्टम,
तऽ फाटल छलनि पेंट
कियो-बुझैत छला अपना कें
`राजकमल`,
कियो गुमाने मे बनल छला `यात्री`
कियो छला अपने मे बनल
`मणिपद्म`
राति बितल जा रहल छल
शंकित छला कविगण -
श्रोता रण छोड़ने जा रहल अछि
कखन सुनायब अपन कवित्वक मर्म
उद्घोषक लग हुअय लागल उपराउझ
पहिने हम... तऽ पहिने हम...
परिस्थिति कें भाँपि...
उद्घोषक लघुशंकाक आशंका दय
उतरि गेला नीचा - पाछू घूरि तकै छथि
तावत सब कवि बनि गेल छला
संसदक नेता

•••

मात्र ओकरे देखैत छी

ओ...
जाहि धरा पर
चलि रहल अछि
मस्त-घमंड-अकड़ल
शासन रसनाक सत्ता सुख मे
भेल मदांध
धराकें सेहो बुझैत अछि अपन
वंदनी.....
उगैत सुरुजकें बुझैत अछि
हमरे जेकाँ इहो उभरल
जा रहल अछि एहि संसार मे
देखि कऽ हमरा लागि जाइत अछि
ठकमुरी
ओकर बुधि-विवेक सँ
भऽ जाइत छी हरान
ओकर प्रवृति ओ चालि-ढालि सँ,
प्रकृतियो पर थोपैत अछि
अपन दासत्वक अधिकार
हम देखि कऽ भऽ जाइत छी
हत्प्रभ, चकित भेल गुम...सुम भेल
ओकरे देखैत छी...
मात्र ओकरे देखैत छी...

•••

अगम-अथाह

गाड़ी मे....
नरमेध यज्ञ चलि रहल छऽल
चुट्टी ससर`क जग्गह नञि
साँसो लेवा मे असोकर्ज
गाड़ी... सीटी मारलकैक
एकटा बुढ़वा....
खिड़की लग आबि....
कहलकैक... बाबू!
हमरो भीतर आबऽ देब
बुझू ई बात बाजि जेना
मधुमाछीक छत्ता पर
ढेपा फेक देने होइक
एक्के बेर सब झाँउ-झाँउ
कऽ उठलैक....
डिब्बाक चारू कातक
तमसायल आँखि
दुर्वासाक रूप....
सतयुग रहितै तऽ
भस्मे कऽ दितैक
मुदा से एकटा दयावान
गेट भट्ट दऽ खोलि देलकैक
बुढ़बा चोट्टहि भीतर आबि गेल...
हँफैत-हँफैत ओकर देह
काँपि रहल छलैक
गाड़ी ससरऽ लगलैक
लोक सब धीरे सुस्ते
गप्प-सप्प मे मसगुल हुअ लागल

गाडियों तेजी मारलकैक
बुढ़वा दयनीय .....रूग्न भेल
करूण भावसँ....
पाखानाक गेट लग ठाढ़
भऽ गेल
एकटा अधवयसू आबि देखि
कहलकैक काका
एतऽ बइस जाउ
बूढ़वा चौंकल...
मुँह सँ `एका-एक बहरा गेलैक
खुदा अहाँ के महफूज राखैथ बौआ`
अधबयसू...पुछलकैक
कतऽ जाइत छी...?
अतर्मन चोट खेने....
क्षण भरि उपर देखलक बाजल
भाग्य जतय लऽ जाइक
ठोढ़ बुद-बुदेलै.... पलक मुनेलै
खुजलै तऽ भीजल छलै
गामो मे ककरो कियो देखैत छै...
पेटो पर... आफद...आस्मानी
बौआ कत्तहु जेबै...
काशी जइयै..... काबा रहियै
जेबै जतऽ, रहवै ओतऽ...
जतऽ ने हेतइ अपन कियो....

•••

बँटवारा

उठलैक बड़का सर्गारोहनि
गर्जा-गर्जी
समाज शांत, मूक दर्शक
तबधल रौद
बसातो छलै शांत
बाँटि ले तऽ बाँटि ले
एकटा बजलै माइयो के बाँटि ले
होइत अपन प्राणांत देखि
कऽ रहल छल कियो
आर्त्तनाद
समाज बैसल
भरन-पोषणक आधा भार
बड़का भाइ पर
बाँकीं क आधा भार
छोटका भाइ पर
साक्षी मानि कएल गेल बँटवारा
धारक कछेरमे
विसर्जित मूर्ति सन बैसल
रहि गेली माय
ओही ठाम

•••

डोमी

छथि खूब कर्मठ योगी
उठैत छथि भोरे-भोर
बुझू अन्हरोखे
हर-फार दुरूस्त करैत
जेता करइ लए हरवाही
जे भेल जा रहल छैक खतम
एम्हर रहैत छथि उदास
जेना हाथ पायर भऽ गेलनि लुल्ह
देख कऽ सब पड़ल छल छगुन्तामे
आब की करता डोमी
हेतनि कोना गुजर-बसर
पड़ले छनि सब काज
पंजाबसँ आयल छला कोकन
सीखा देलखिन हाथक इलिम
रिक्साक डरेभरी
आब पेटक खातिर खिचैत छथि रिक्शा
अही खाधि-हुच्ची-चभच्चा मे
ठेल-ठालि कऽ एकठामसँ दोसरठाम
राति-बिराति फेर आबि जाइत छथि
रिक्शा`क सीटपर बैसल अपन गाम
नहि गमबैत छथि व्यर्थ एक्को पल
जखन मुखिया नाम काटि देने रहनि
पछिला बरख इनरा आवाससँ
दुखायल मोने बाजल छला
रहौक आबाद अपन ई दुनू हाथ
से नहि गेलनि हुनकापर
ककरो धियान
किएक तऽ
नहि ककरो करैत छथिन्ह पमौजी
ने ककरो करैत छथिन्ह राम-सलाम

●●●

भूत-वर्त्तमान-भविष्य

कविता जे हम लिखैत छी
से छैक सत्य
हमर जीवनक हिस्सा
रहैत अछि नितांत खास हमर शब्द
कवितामे रहैत अछि
हमर मोनक बात
हमरा नहि अछि
कोनो सऽख आ मनोरथ
नहि पिछला पाओत हमरा
कोनो शान-रोआब
नहि चाही कुर्सी
करबाक लेल हुकमति
अछि मात्र एकटा सपना
करी भारतमे मिथिलाक
कला संस्कृति ओ अस्मिताक विकास
जगाबी मैथिलक स्वाभिमान
राखी अपन भाषा-साहित्य ओ
शब्द सरोकार
तैयार करी पूर्ण सबल
एकटा मैथिल जवान
जे एहि एकैसम सदीमे
अतीतसँ वर्तमानकें जोड़िकऽ
बनैक भविष्यक द्रष्टा होइक कियो युग श्रष्टा
राखौक कियो युग पुरुष
जोगाकय एकर अस्मिता

•••

हृदयमे झंकार

समटा जइतैक हमरा कवितामे
प्राकृतिक सौन्दर्य
क्षितिजक-सुन्दरता
मानवीय सौहार्दक रूप-रेखा
होइत अन्याय-अनाचारक
समाधान
दऽ दितियैक एकटा
स्वच्छ सजल समाज
भेंट करबितहुँ समाजकें
शब्द-रूप, रस-रंग-छंद-अलंकारसँ
जकर अनुभव मात्रसँ होइत छैक
हृदयमे झंकार
जे बदलि दैत छैक ओकर
राक्षसी प्रवृत्तिकें
नष्ट भऽ जइतैक मनुखक
`एकोहम द्वितीयो नास्तिक` भावना
समटा जइतैक हमरा कवितामे
जातिक झगड़ा, वर्ग-संघर्षक रगड़ा
भूखक निदान
तऽ सफल होइत हमर जीवन
सफल होइत कविता
सफल होइत हमर कवि-कर्म

•••

नवका मुखियानि

जहियासँ ओ जीत कऽ
भेलखिन्ह अछि मुखियानि
तहियासँ हुनका संग
हुनकर घरक लोक सभहक
रोब आ रूतवा
गेलनिहें बदलि
रहैत छथिन्ह सड़केक दिससँ
बैसल दलान पर चिबबैत पान
करमचारी, ठीकेदार
मास्टर, थाना ओ पुलिसके
देखबैत छथिन ताबेरदारी
करैत रहैत छथिन मोल-भाव
इनरा-आबास, वृद्धा पेंशन ओ
मनरेगाक जोन-बोनिहारसँ
देखैत छथिन्ह पंच-सरपंचकें हेय दृष्टिएँ
गुड़रैत आँखि निर्दयी भेल
बाहुबली कोनो पुरूष मुखियासँ बेसी
मङैत छथिन्ह रुपया अपन हक
डेरा कऽ धमकाकऽ चरा-बजाकय

•••

छोड़ि दिय रस्ता हमर

छोड़ि दिय रस्ता हमर ई
मातृभाषाक गौरव-गान सुनावय दियऽ
प्राचीन थिक भाषा हमर
छैक समृद्ध इतिहास एकर
जन-जनकें अपना सँ
अपनेकें परिचय करावय दियऽ
विसरि रहल अछि अपन
गौरव-गाथा
सबके परचारय दियऽ
भारतीय मानचित्रपर मिथिलाक
विशिष्टता आब हमरा सुनावय दिय
जगजननी जानकीक जन्मस्थली
पुण्य पावन धाम मिथिला
नरक भेल जा रहल अछि,
विसरि गेल अछि
रानी कुसुमाक विरांगनाक जीवन
सती विहुलाक तपस्वीनीक रूप
फुलेश्वरीक जीवन संघर्षक कथा
गाबय दिय छोड़ि दिय रस्ता हमर ई मिथिलाक गौरव गान
हमरा गाबय दियऽ
हृदय कठोर केने
चुपचाप नोर पीबैत रहलहुँ
सीताक शील रामक मर्यादा
जनकक विदेह गाथा गाबय दियऽ
छोड़ि दिय रस्ता हमर ई
मातृभाषाक जनम घुट्टी पीयावय दिय
मिथिलाक महात्म्यमे
द्रोण नगरक रानी तुलेश्वरीक दानशीलता

लोरिकाइनक प्रेरणात्मक कथा
मांजरि ओ चनैनक धीरता
ज्ञानशीलता-शहनशीलतासँ परिचय करावय दियऽ
आकाशसँ पाताल धरि पसरल
हमर मैथिली भाषाक इतिहास सुनावय दिय
सुनावय दिय गार्गीक ज्ञान
कात्यायनीक त्याग, भारतीक वैदुष्य गुण
भामतीक अलख दीप महात्म्य सवके
सुनावय दिय... छोड़ि दिय आइ हमरा
मातृभाषाक जनम घुट्टी पीयावय दिय
छोड़ि दिय रस्ता हमर ई
मातृभाषाक गौरव-गान सुनावय दियऽ

●●●

अपियारी

कहैत छलिय किने.....
नजि मानतैक ई सरकार
होइत छैक नापी-जोखी
तीन सय चौबीस एकड़
कुल जमा रकबा
हेबे करतैक कोनो बड़का
सरकारी फेक्टरी
हमरा तऽ बुझिते छहक
नेताजीक दहिना हाथ
देखने रहऽ इलेक्सनमे
जाने पर खेलकऽ...
कतेको बूथ रही कैप्चर केने
कहने रहियनि नेता जीके
जे एम्हर भेल से भेल
मुदा आगू किछु करऽ पड़त
की रासलाल कएकटा बेटा अछि?
दू टा.....
नौकरी तऽ नहिए करैत हएत
बुझिते छिऐक
देखइयौक राजावलि-गढ़ मे बनतैक `फेक्टरी`
तऽ हेतैक हमरा छौड़ा सवके
किएक नहि हएत?
मुदा लागत किछु खर्च
जे लगतैक, से देवैक
विहाने हम जा रहल छी
भेटि गेलनि टाका
गेला दरवार

गेटे पर रोकि देलकनि सिकुरीटी
नहि जा भेलनि भीतर
ता गड़-गड़ाइत चऽल अयलनि
नेता जीक गाड़ी
कुटिल हँसी हँसैत
की हौ केम्हर ?
एम्हरे
किएक?
बाक नहि बहरेलनि
गाड़ी आगू बढ़ि गेलैक
सिकुरीटी धक्का दऽ बाहर कऽ देलकनि
मुन्हारि साँझ
आब कतऽ जायब एहि विशाल शहरमे
ओह ! महावीरे जीक मंदिर
पर रहि जायब
ता भीतरे-भीतर मोन पड़लनि
जे महावीरे जीक पूजारीकें
मारि देने रहियैक
मात्र अपन भोंट खसबऽ आयल रहैक ताहि लेल
अभिशप्त मोन दु:खी भेल
चल अएला भोड़के गाड़ीसँ आपस
गामक लोक जोहैत छल बाट
टीसने पर सँ, लोक सब हुअऽ
लगलनि संग
कहिया अओता नेता जी?
एखन कोनो प्रोग्राम नहि छनि
मुदा अओता नजदीके मे
की गप्प-शप्प भेल?
अपना गामक बिजली खम्भा

एगच्छा लगहक पुलिया
सब अहिना रहत
एखन अइ सब पर बेसी गप्प
नञि भेल... कहलनि
पहिने गढ़ मे हुअय दहक
मोने-मोन लगलै सबके गुद-गुदी
कोना बाजत स्वार्थक फूजल बात
मुदा अपनहि बाजि उठला
देखियौक रासलालक कपार
कहलखिन अपने नेता जी
कहबैक ओकरा निश्चिंत रहऽ लेल
भेले छैक ओकर दुनू बेटाके
एतबा सुनैत देरी एके बेर
सब बाजि उठल
आ हमरा सब पर
तऽ से हम छिहे किने
आब बुझू हुनका ओहिठाम
चढ़ऽ लागल चढ़ौआ
दूध-दही-माछ आ साँझू पहरक`पौआ सेहो।
बाते तेहेन रहैक
नौकरी...:आ...सरकारी
कहबाक माने...
जे जतेक रिझायत हुनका
तिनकर नौकरी ततेक पक्का
आब तऽ बूझू फसऽ लागल ``अपियारी`` मे
गड़ै-गरचूनी संग बड़का-बड़का पढुआ सब सेहो
रासलालक तऽ जेना बुझू...
पाँचो अंगुरी घी मे
दुनू बेटा कुमार

आबऽ लगलै बर-तुहार
नहि बैसऽ दइक रासलाल
ककरो नाँक पर माछी
कन्हुना पचगामाक धनिकक
ओहिठाम पटलैक गप्प
एम्हर दुनू भाइ
ओम्हर दुनू बहीन
चिक्कन दहेज पर टुटलैक गप्प
खूब धूम-धाम सँ चढ़लैक `सगून`
गोर पनरहेक गाड़ी सँ
गेलैक बरियाती
बाजा-गाजा के पुछइए
बाहरे सँ आएल रहैक `बाई`जी
बीड़ी-चिलम-सिगरेट
के धुकइए
ताड़ी-दारू के पीबइए
इंगलीसे पर सब हाथ फेरइए
एही सब मे गप्प-पर-गप्प
उतराचौर भेलैक...
समधि आबि कऽ पुछलकैक
बिआह दान तऽ भइए गेलैक समधी
कतऽ हेतैक
पहुना अउर के नौकरी
एही ठाम गऽढ़ मे
देखने हेबै पछिला बरख
गऽढ़ पर भेल रहैक
दिन पनरहेक जबरदस्त नापी
नेताजी कहलखिन्ह माने
बूझू नौकरी पक्का

समधि के ठनकलै माथ
ई तऽ हमरे गामक
निरधनमा ओ निरसनमाक झगड़ा मे
ठोकर मिलेवाक लेल गढ़ो पर
भेल रहैक नापी
सएह देखि कहै छी नौकरी
समधि ठोकलक कपाड़
आँखिक आगू पसरि गेलनि अन्हार।

•••

दुनियाँ एकटा गाम

हमरा मोन अछि...
अपन मामागाम....
साँझ आ परात होइत-होइत
घुर लऽग.....
लागि जाइत छलैक एकटा महासभा
जुटैत छल लोक
नेना-भूटका, जऽर-जबान
बूढ़-पुरान
गहि-गहि कऽ जेना
बनबैत छऽल गप्पक बीड़ा
घूर लगहक गप्पमे जे
तल्खी रहैत छऽल
से अखुनका कोनो इलेक्ट्रॉनिक
मीडिया समाचारक
रहैत छल बाप
दलानक आगू माँझठाम
होइत दाउन-दोगाउन
कात-करौटमे होइत छल घूर
छुटैत छल सिगूफा
बरदक होहकारीमे
रामपरसादक महींसक पैकारी
अमेरिका मे राष्ट्रपति रेगनक दादागीरिक कथा
रूसक गोर्वाचोबक ग्लासोनोस्त-बँटबाराक व्यथा
जटा मामा जेना लगैत छल
डायरेक्टर बचैत छथि बी.बी.सी. सँ समाचार
बूझू छला जेना बिनिकऽ विशेष अतिथि
कहबाक जे छटा से
माने लगैत छल
U.P.S.C. ओ B.P.S.C. आ बैंक-पीओ आदिक
बनिजाइत छल कोचिंग सेंटर
से ओहन सुन्दर सजायल
हमर मामागाभ....
कतऽ चलि गेल

मामा गाम....सम्पन्नता मे
भेल आन्हर...
कनखरल अछि जेना सब एक दोसरापर
भऽ गेल छैक पक्के-पक्का मकान
ओइ मे तकैत हम अपन मामागाम
देखकऽ कहलक हरेराम बाबूक बेटा
की तकैत छी काका
छोड़ू ई सब
गाम तकबाक अछि तऽ
लऽ लियऽ एकटा कम्प्यूटर वा लेपटॉप
आ लगा दियौक इंटरनेट
कऽ लियऽ रूस, अमेरीका, जापान ओ कनाडा
घुमैत-फिरैत नन्कू बाबू सँ मुखौतरी
सोशल कम्यूनीटिक सांइटिस्टक खेल
दुनियाँ गाममे हाजिर
फेसबुक-आर्कुट-ट्विटर माइक्रोब्लॉगिंग सिस्टम
लिख लियऽ अपन मोनक बात
क्षणे मे भऽ जाएत हिट
आबऽ लागत एस.एम.एस.
संसार करऽ लगैत अछि
नमस्ते राम-सलाम
आगू बढ़बाक लेल लोक
दिन-दिन भटकि रहल अछि
मुदा अपन जन्महि स्थान सँ
बढ़ि रहल छैक दूरी
अनुगत-अहसास, अपनैतीक-आभास
दोस्तीक-स्वभाव
सबटा बदलि रहल छैक
नेनपन मे कहियो देखने हेबैक
आबि पुछैत अछि
हमरा चिन्हलहुँ...!
सुनिकऽ लगैत छी सकपकाय
आ माथ पकड़िकऽ लगैत छी गोंगिआय

•••

मैथिलक आङ्न घमंडीक पथार

नहि बुझना गेल
कतऽ आबि व्यर्थ समय
गमबैत रही
साहित्यक अध्येता छी तें
साहित्यक संवर्धना करबाक
छोट-छिन प्रयास करैत रही
होइत छल साहित्यक मर्मज्ञ
साधना मे छथि
किछु शब्दक सरोकार बना
साहित्यमे योगदान करी
मुदा मैथिलीक आँगन
घमंडीक पथार
करैत अछि नाटक
साहित्य-समाजिकताक
आवरण ओढि
अपन छद्म स्वार्थक पूर्तिक लेल
मिथिला-मैथिलीकें
बनबैत अछि बड़का हथियार
संस्थाक नामपर
मिथिला ओ मैथिलीक
आधार बना रचैत अछि स्वांग
करैत अछि पिकनिक
नहि छैक ककरो लग
मिथिला-मैथिलीक विकासक योजना
योजक बनबाक करैत अछि ढोंग
उद्देश्य मात्र एतबे जे
चिन्ह जाइन्ह दस गोट लोक

●●●

नोचनी

सबटा काज-धंधा निपटा
पहुँचलहुँ जखन अपन होटलक रूममे
कपड़ा बदलबाक करैत रही उपक्रम
तखने हउयाय लागल हमर पीठ
माने बुझबा मे आएलभऽ गेल अछि नोचनी
लऽ जाइत छी अपन हाथ ओहि स्थान पर
मुदा जेना ओ नोचनी ससरि जाइक
हमरा हाथ सँ दूर...
तखन हमरा याद आयल अपन जनऊ
मुदा से हम `छोड़ि आयल छी
अपन कलकत्तामे बासाक खुट्टीपर
नोचि लितहु अपन पीठ
फेर कतहु ओंगठिकऽ
कोनो भीत - टाट - वा कटही
गाड़ीक पौआमे....
से कतहु - किछु नञि
मोन पड़ल ई बात
हमरा गुलाबी शहर..
जयपुरमे

•••

खाधि

भाइ ! आब ओ नञि
रह देथिन
आसमान-सागर-पहाड़
भूमि, पोखरि, जंगल आ धार
नञि रहलनि किछो पहुँच सँ बाहर
भाइ !
हुनका सबहक गद्दी मात्रटा पर नञि रहलनि
पात-पात पर छनि अधिकार
अहाँ कहैत छी भाइ?
हुनका नञि छनि एहि समाज,
गाम-घर, धरम-करम सँ कोनो
सर-सरोकार
ओ पहुँचि गेल छथि पटना ओ
दिल्लीक दरबार
भाइ !
ओ गमइया के बुझैत छथि गमार
देशी बैंक के बुझैत छथि बेकार
टाकाक बंडल मात्र रखैत छथि
विदेशी बैंकक-बेनामी कोडक अकाउंट पर
चप्पा-चप्पापर छनि हुनकर पहरा
हुनके पाछू-पाछू घुमैत अछि -
पुलिस प्रशासन
योजना-आयोग, सीबीआई वकील
जज, बारिस्टर ओ कलक्टर
भाई देखैत छियनि
एके दूइए पन-सलियाक छनि ई हाल
कतऽ सँ कतऽ पहुँचि गेलखिन
हाथ मे देखबनि रत्न जड़ित औंठी

दरबज्जा पर देखियौन BMW कार
राजनगरक नौ लखा टूटि-टाटि कऽ
भऽ गेलैक बेकार
देखब भाइ !
किछुए दिनक बाद
भऽ जेतैक करोड़याही शीश महल तैयार
की कहै छी भाई !
छोड़ू ई सब अध्यात्म ओ सिद्धान्तक बात
भाइ ! ई सब थीक किताबी सिगूफा
भरमा कऽ लोक के अछि ठगबाक उपाय
एकटा बात पुछू भाइ?
बनले रहतै ई धनिक आ गरीबक
बीच मे खाधि?

•••

गौंआँ छैक बकलेल

विडियो, सी.ओ. करमचारी लुटलक
जनता भेलै कंगाल
मुखिया-सरपंच-वार्डपंच धरि
भेलै मालोमाल
गाम-घरक छुटभैया नेता
ठिकेदार संग लुटलक
ककरा कहबै के हमर सुनतै
हमही छी वेकार
सब कहै छै कागजी घोड़ा दौड़ा कऽ
हसोथी सरकारी माल
हाकिम-जुमला सब कियो अएला
विकासक डमरू खूब बजेला
एम.पी., एम.एल.ए., सब कियो अएला
सबहक मोनक एके खेला
कोना पचायब ई अरजलहा...
पाँच करोड़...
कहलक मुखिया - सुनू नेताजी
शांत रहू हाकिम
ई थीक हमर पंचायत
हम जनै छी सबहक नस-नस
लगतै ककरा कोन दबाई
तेहने आगि सुनगौलकै मुखिया
पाँचहि हजार मे गौआँ भेलै दू टोल
गारल मुर्दा फेर उखारलक मुखिया
बिसरि गेलै गौंआँ पाँच करोड़
बाजल मुखिया...देखलहु नेता जी
कहलहुँ हाकिम गौंआँ अछि बकलेल

●●●

छाँह

प्रिय ! की सुन्दर लगैत छी
मनक फुलवारी मे फूल खिलखिलाइत अछि
सत्य कही...प्रिय !
अहाँक ई दुनू मृगनयन
सुगा सन ठोढ़ अहाँक
दारिम सन दाँत
आर कतेक वर्णन करू... प्रिय
अहाँक हँसीक एक-एक कतरा
कोटि-कोटि सूर्यक लालिमा सदृश
लगैछ... प्रिय !
हमरा भीतरे-भीतर
रसिक भमरा गुंजय लगैत अछि
मुदा
आब की होयत!
हमरा संग आबि गेल हमर छाँह
जकरा देखि हमरा मोन पड़ि जाइत अछि
पिताक लागल खेत भड़ना
गामक दुःख ओ अवसाद भरल जीवन
ओतय खिन्न भेल हमर माय
खिसयायल ओकर चेहरा
खेतमे छैक जोन
नञि छैक घर मे बोनि आ बुतात
भुखे लहालोट-लटुआयल मुँह
जीतन देह परहक गंजी भेल छैक
चेथरी-चेथरी, झपने अछि कन्हुना
कोपिन पहीर अपन पर्दाक अग
संवेदनाक अथाह पोखरिमे
हमर पिता लगबैत छथि डुबकी

प्रिय ! आब हम नहि सुनब
अहाँक कोनो बात
हमरा संग अछि हमर छाँह
हमर पिता कहैत छथिन
लगा दही सिवोत्तर खेत भड़ना
ककरो हाथे मुदा अबिहें
नवका धोती-गंजी
पहीर कऽ अंगना
प्रिय ! हमर छाँह हमरा कऽ दैत
अछि बेचैन....
सुगबुगाय लगैत अछि हमरो
भीतर-भीतर ओएह जीन....

•••

विद्रोही मन

नहि रहैत छैक शांत
अरुणोदय
अपन इजोतक बिनु
कहाँ रहैत छैक फूल
अपन परिमल बिनु
जल कहाँ रहैत छैक शांत
बिनु तलांत तक गेने
विद्रोही मन नहि रहैत छैक
शांत कोनो यक्ष प्रश्नक
संधान ओ समाधान बिनु
प्रश्नक विष-पात्र नेने
परमोज्ज्वल सत्य पर
लागल ग्रहण सँ
परितप्त होइत जनैत
समाजक अपराधकें
निरस्त करैत
फहरा दैत छैक
अपन सत्यक धूजा
उखारि फेकैत अछि
ओकर मूल मद् अहंकारकें
आत्मबलक अपन तर्कसँ
अपन शील-स्वभावक बलें
समाजक चौकठि सँ बान्हल
परम सत्य सौन्दर्यकें फोलि
समाजक मध्य दैत छैक
पसारि

●●●

गाम पूर्ण विकासक रस्ता पर

गाम आब पूर्ण विकासक रस्ता
धऽ लेने अछि
ओना सड़कक काज अधखिजुए
रोड़ीटा अखन खसलइए
माटिक काज संपूर्ण भऽ गेलैक
से मुदा लोक सब शहरे जकाँ
मोन-मिजाज बनेने जा रहल अछि
आब गाममे ओ प्रेम-भाव नहि रहलै
एकटा सहोदर भाय अपने अवलाहा भायकें
अपन गोठ सँ भगाबऽ पर तुलल अछि
बाप मुदा बोनि-बुता, खेती-पथारी, पूजा-पाठ
कऽ धऽ कऽ गुजर बसर केने रहैक
से एकटा एलैक शहर आ एकटा रहलै गाम
एकटा भऽ गेलैक गरीब एकटा भऽ गेलैक धनिक
समाजमे आब शहरे जकाँ बदनेती आएल जाइत छैक
किएक तऽ गाम पूर्ण विकासक रस्ता धऽ लेने छैक
गाम मे गामक आचार-विचारपर
कियो गप्प नञि करैत छैक
गामोमे कहाँ जाइत छैक
ककरो दुरा-दलान-आँगन
सुकना काकाक देह
फोकराइन-फोकराइन महकैत छै
सुततै मुदा ओहीठाम जे जगह मोफत के छै
चौकी दियौक डिबिया देखबियौक
जेना खराँती बटाइ छैक
शहर मे एक बेडक चार्ज
बुझल छऽ सुकना काका
से छोड़ऽ आब तोरो मासे-मास
दू सय टाका देमय पड़तऽ
आब काका ने भैया सबसँ पैघ रुपैया

●●●

कविता मे बेचैनी

हमर आँखि
हमर आँखि
हमर आँखि
पहिने सँ बेसी रंग-विरंगी भऽ गेल अछि
चारू कातक इलेक्ट्रॉनिक चकमक इजोत
बिम्बक पथार लगा देने छै
कविताक पारंपरिक घर घुसकिकऽ
अपन स्थान बदलि लेलकै
हमर व्यवहार आब ओहेन नहि रहल
जे अढ़ाइ दसक पहिने छल
चलैत-फिरैत बिम्बक बाहुल्य
हमर विचारकें थीर कहाँ रह` देलकैक
पूँजीवादी व्यवस्था आ
उत्तर-आधुनिकताक टोटका
हमरा कारगर नञि रहऽ देलक
हमर आँखि
हमर आँखि
हमर आँखि
पहिनेसँ बेसी रंग-बिरंगी भऽ गेल अछि
डिजिटल टेक्नॉलाजीक स्वरूप
भाषाक मुहावरा इजाद कऽ रहल अछि
बाजारवादी आवाज
औद्योगीकरणक उन्माद
हमरा कविताकें बेचैन कऽ देने छैक
हमर आँखि
हमर आँखि
हमर आँखि
पहिनेसँ बेसी रंग-विरंगी भऽ गेल अछि
हमर आँखि पहिनेसँ बेसी रंग-विरंगी भऽ गेल अछि।
●●●

माटि

जहिया किछु नहि रहल हेतैक
तहियो छलैक
जखन किछु नहि रहतैक
तखनो रहबे करतैक
से माटिकें माटि रहबाक
जे यात्रा केहेन ...अद्‌भुत
सर्वोच्च विकास अही माटिपर
विनाशक लीला अही माटिपर
ब्रम्हा माटिपर
विष्णु ओहो माटिपर
महेश सेहो अही माटिपर
मनुखक रूप एतबे
सब किछु माटि लय
सब किछु माटिपर

●●●

पसेनाक फल मीठ

कर्मशील पुरुषक
कयल गेल मेहनत-मजूरी
ओहि सऽ निकलल पसेना
ओकर गुण-धर्म
समाजक करैत छैक मार्गदर्शन
जीवनक रस्तामे
कर्मयोगियो होइत अछि भगवान
करैत छथि सुख-सागरक निर्माण
गीताक मूल
कर्मन्ये वाधिकाररस्तु..

●●●

वकील

सत्यक सावित करवा लय
झूठक राखथि वेस दलील
हुनके सब एखन वुझैछ अछि
भारी बड़का वकील।

●●●

हाकिम

देखियो कऽ जे
बिनु देखल बुझैथ
छनि हुनक लाचारी
एहने लोक कें
लोक कहै छै
हाकिम-हुकुम अधिकारी

●●●

लोक रहत-राज भेटत

गोर पचीसेक राज
घूमि-फिर आयल छी सरकार
नहि देखलहुँ भाषा कतहु बाँटल
जाति-जाति ओ बोली-बोलीमे
बाँटल अछि मिथिला
कायम करू पहिने
बेसी लोक - बेसी बजनिहार
प्रजातंत्रमे जनते थिक भगवान
पहिने करियौ जनताक धियान
तखन करू नेताक ओरियान
फेर सुनू यौ सरकार
भेटबे करतइ अपन राज

●●●

1.
मरुस्थल मे
मृग मरीचिकाक समान
दौड़ैत लोक
एहि संसार मे
2.
केहेन संसार
केहेन लोक...
केहेन विज्ञान
इच्छा संतानक
उधार मङैत अछि कोखि
3.
कलियुगक धर्माचरण
ओहिना जहिना
कवितामे व्याकरण
4.
छल जखन आचरण भऽ गेलै
साहित्यकार समाजसँ दूर रह लगलै
संस्था जखन जागरणसँ सम्बन्ध
तोड़ि लेलकै....
पत्र-पत्रिकाक विचार एक भगाह भऽ गेलै
नेता रक्तपिपासु हवसीं क रूप लऽ लेलकै
तखन व्यक्तिक एहि संसार मे
समाजसँ केहेन सरोकार बनतै!
5.
संज्ञाहीन भेल संज्ञा
पुरुषत्व हीन भेल पुरुष
अर्थ विहीन भेल वाक्य

जनता विहीन भेल सत्ता
लौकिकता विहीन भेल मिथिला
की!
एखनुका इएह भेल विशष्टता?
6.
जन-जीवन अस्त-व्यस्त
जनता सरकारी व्यवस्था सँ त्रस्त
कानूनक सुरुज भेल जा रहल अछि अस्त
चारू दिश पसरल जा रहल अछि
व्यभिचार जबरदस्त
7.
आब कोनो
मयना आ हिमालयकें
पार्वतीक विवाहक
चिन्ता नञि
लऽ अनतीह स्वयं
कत्तहु सँ कोनो
अढरण ढरन महादेवकें
8.
गृहस्थीक अद्‌भुत सागरमे
उवडूब करैत
हृदय मे दर्द नेने
हकन्न कनैत ओकरा लय
मुदा ओ अपन जीवन मे
ग्रहण लगा आयल अछि
मुम्वई जा कऽ

•••

शृंगारक एक उपादान नारी

धर्मक सूत्र इएह कहैत छै
जन्म दैथि स्त्री पुत्र-संतान
पुत्रवती नारीकें भेटतनि हुनकर सम्मान
अपमानक अपने नजरिमे
देखू नारी... दुनयाँक रंगोली
सब धर्म, पंथ, समुदायमे
नारीक हिस्सा अपमानक ढेरी
कहबालय सह भागिनी मुदा बनल अछि `सामान`
लिखलनि साहिर, `पुरुषक जन्मदात्री थिकीह महान`
निकृष्ट पुरूष भेल केहेन देलकनि हुनका हाट-बाजार
छीनि लेलक पुरूष जाति सबटा हुनकर अधिकार
धर्मक अंधविश्वासमे शोषित रहली नारी
अधुनातन एहि युगमे नारी भोग्या बनले रहली
भ्रुण हत्यासँ लऽ कऽ हत्या होइत अस्मिता
मरैत रहली आइ धरि माता-बहीन, भगिनी ओ दुहिता
बदलल दुनियाँ जीवन लेलकै रफ्तार
भऽ गेल अछि नारीक दशा पहिलोसँ बेहाल
एहि `बतहा संसार` मे फेर लिखायल धर्म-सूत्र
अनुभव सँ लिखला `राजकमल` पुरुष अछि महाधूर्त
एन्द्रिक अश्लील रूपमे नारी काव्य शृंगारक उपादान
करिते रहत पुरुष जाति सहस्त्र अहिल्याक धियान``

•••



आमोद कुमार झा

नाम : आमोद कुमार झा
जन्म : 01-11-1968
पिता : स्व. दयानाथ झा
माता : श्रीमती बच्ची देवी
मौसी : स्व. मुंद्रिका देवी
(जिनक सृजनशीलताक बलें अस्तित्व कायम अछि)
गाम : मौगलाहा, पोस्ट-मिश्रौलिया, भाया-बाबूबरही, मधुबनी
पालन-पोषण : दुर्गौली, पोस्ट-मनपौर, भाया - खिरहर, मधुबनी
शिक्षा : माध्यमिक उच्च विद्यालय, खिरहर
अन्तर-स्नातक, फू.दे. कु. झा महाविद्यालय, अंधराठाढ़ी
स्नातक (प्रतिष्ठा) मैथिली, च.मि.महाविद्यालय, दरभंगा
स्नातकोत्तर (मैथिली), पटना विश्वविद्यालय, पटना
राष्ट्रीय पात्रता परीक्षोतीर्ण (NET)
बिहार पात्रता परीक्षोतीर्ण (BET)
प्रकाशित कृति: 1. बिम्बक पथार (कविता संग्रह)
2. कोलकाता : मैथिली कविता (संपादन)
3. आधुनिक मैथिली कविता दशा ओ दृष्टि (संपादन)
विभिन्न पत्र-पत्रिका ओ स्मारिका आदिमे अनेक रचना (आलेख, निबंध, कथा, कविता आदि) प्रकाशित।

वर्तमान पता : न्यू गड़िया, पुलिस पाड़ा समीप आश्रम, कोलकाता-152
मो. : 9433100407, 9007730755
ईमेल : amodjha2@gmail.com

HAREKRISHNA PUBLICATION

Print & Design by : Lakhanpati Jha, Kolkata, Mob. : 09748120990, 09883072050